सम्पादक

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सहायक

मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,

लखनऊ – 226007

फोन : 0522–2740406

फैक्स : 0522–2741221

E-mail : nadwa@sancharnet.in

nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

फ [illegible]	[illegible]
वार्षि [illegible]	[illegible]
विशेष	[illegible] 50 [illegible]
विदेशों वार्षिक	[illegible] डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग

लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

नवम्बर, 2013 वर्ष 12 अंक 09

माहे मुहर्रम

साले हिजरी का महीना है मुहर्रम मुहतरम
ख़ल्क़ पर इस माह में होता रहा रब का करम
यौमे आ़शूरा इसी में हैं मुबारक एक दिन
रोज़ा रखना चाहिए हम सबको आ़शूरे के दिन
है मिलाना इसमें अच्छा 9 का या 11 का दिन
पर नहीं होता अमल अल्लाह की तौफ़ीक़ बिन
रब ने अपने फ़ज़्ल से हमको दिया यह जानो माल
गर इन्हें वापस वह ले तो उसकी जान और उसका माल
मुहतरम ह़सनैन का शुहदा में ऊँचा मरतबा
जन्नती सरदार हैं वह उनका है दर्जा बड़ा
है शहादत की तमन्ना मेरे रब मेरे ख़ुदा
राहे ह़क़ में जान निकले है यही मेरी दुआ़
या ख़ुदा प्यारे नबी पर तेरी रहमत हो मुदाम
हैं वही आख़िर नबी और हैं वही सबके इमाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
यौमे आ़शूरा और	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	10
मारक़–ए–ईमान व माद्दीयत	मौलाना अली मियाँ नदवी रह0	12
पाँचवें खलीफ–ए–राशिद	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	15
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	19
पड़ोसियों के हुकूक़	अल्लामा सै0 सुलैमान नदवी रह0	20
लक्षमण रेखा	शमीम इक़बाल खाँ	23
दो नज़्में	इदारा	25
शिक्षा दीक्षा का इस्लामी	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	28
दादी अम्माँ से एक वार्ता	नाहेद फातिमा	31
बीमार के हुकूक़	अल्लामा सै0 सुलैमान नदवी रह0	35
दीने इस्लाम हक है	इदारा	37
मुलाक़ात एक डॉ0 साहब से	इदारा	38
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

–मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकर:

अनुवाद :- और न बनाओ अल्लाह के नाम को निशाना अपनी क़समें खाने के लिए कि सुलूक करने से और परहेज़गारी से और लोगों में सुलह कराने से बच जाओ और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है(224)। नहीं पकड़ता अल्लाह तुम को तुम्हारी बेहूदा कसमों पर लेकिन पकड़ता है तुम को उन क़समों पर कि जिन का इरादा किया तुम्हारे दिलों ने और अल्लाह बख़्शने वाला तहम्मुल करने वाला है(225)।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. यानी किसी अच्छे काम न करने पर खुदा की क़सम खा बैठे मसलन माँ–बाप से न बोलूंगा या फकीर को कुछ न दूंगा या बाहम किसी में मुसालहत न कराऊँगा ऐसी क़समों में खुदा के नाम को बुरे कामों के लिए वासता बनाना हुआ सो ऐसा हरगिज़ मत करो और अगर किसी ने ऐसी क़सम खाई तो उसका तोड़ना और कफ़्फ़ारा देना वाजिब है।

2. यनी अगर कोई क़सम खाता है तो अल्लाह उसको सुनता है और अगर कोई अज़मत व जलाले खुदावन्दी की वजह से क़सम खाने से रुकता है तो अल्लाह उसकी नियत को खूब जानता है। तुम्हारी कोई बात ज़ाहिरी और बातिनी उससे पोशीदा नहीं इसलिए ये नियते क़लबी और कौले लिसानी दोनों में एहतियात ज़रूरी है।

3. लग़व और बेहूदा क़सम वह है कि मुँह से आदत और उर्फ़ के मुवाफिक बेसाख़्ता और नाख्वास्ता निकल जाये और दिल को खबर तक न हो ऐसी क़सम का न कफ़्फ़ारा है न उसमें गुनाह है अलबत्ता कोई बिलक़स्द अलफाज़–ए–क़सम मिस्ल वल्लाह और बिल्लाह कहे और उससे महज ताकीद मक़सूद हो क़सम का क़स्द न हो तो उस पर ज़रूर कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा और कफ़्फ़ारा का बयान आगे आ जोयगा।

4. यानी जो क़सम जान बूझ कर खाये कि जिस में दिल भी ज़बान के मुवाफ़िक़ हो उस क़सम के तोड़ने पर कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा।

5. गफूर है कि लग़ब और बेहूदा क़स्मों पर मुवाखज़ा न फरमाया, हलीम है कि मुवाख़जा (पकड़) में जल्दी नहीं फरमाया शायद बन्दा तौबा कर ले।

❖❖❖

अनुरोध

पाठकों से अनुरोध है कि वह 'सच्चा राही' के बारे में हमको अपनी राय अवश्य भेजें।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

फ़ज्र की सुन्नत की तख़्फ़ीफ़

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत आयशा रज़ि0 कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह की अज़ान और इक़ामत के बीच दो हल्की रकअतें पढ़ते थे।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

इन दोनों रिवायत में से हज़रत आयशा रज़ि0 ही से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसी हल्की दो रकअतें पढ़ते थे कि मैं गुमान करती थी कि आपने सूर–ए–फातिहा भी पढ़ी है या नही।

मुस्लिम की एक रिवायत में हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अज़ान सुनते या सुबह हो जाती तो आप उन दो रकअतों को हल्की कर देते थे।

हज़रत हफ़सा रज़ि0 से रिवायत है कि जब मुअज़्ज़िन अज़ान दे देता और सुबह जाहिर होने लगती थी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो रकअ़तें हल्की पढ़ते थे। (बुखारी—मुस्लिम)

और मुस्लिम की एक रिवायत में हैं कि जब सुबह तुलूअ़ हो जाती तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो रकअ़तें हल्की पढ़ते थे।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तहज्जुद में दो रकअ़तें पढ़ते थे और आखिर रात को एक रकअत वित्र पढ़ते थे और फज्र की नमाज़ से पहले अज़ान सुन कर ही दो रकअ़त पढ़ते थे और इक़ामत गोया आपके कान में थी (बुख़ारी— मुस्लिम) यानी अज़ान के मुत्तसिल ही सुन्नत पढ़ लेते थे गोया फ़र्ज़ की इक़ामत होने वाली है)।

❖❖❖

हज़रत अ़ली रज़ि0 के कलिमाते तय्यिबात

1. फरमाते थे कि "बन्दे को चाहिए कि सिवा अपने रब के किसी से उम्मीद न रखे और अपने गुनाहों के सिवा किसी चीज़ का ख़ौफ़ न करे।"

2. फरमाते थे कि "जो किसी बात को न जानता हो उसको सीखने में शर्म न करनी चाहिए और जब किसी से ऐसा मसला पूछा जाये जिसका उसे इल्म न हो उसको बे तकल्लुफ़ कह देना चाहिए" वल्लाहु आ़लम।

3. फ़रमाया करते थे "कि तमा (लालच) की चका चौंध में अक़्ल गिर जाती है"।

❖❖❖

यौमे आशूरा और हादिस–ए–करबला

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

मुहर्रम का महीना बड़ा मुहतरम है इसका शुमार उन चार मुहतरम महीनों मे है जिसका इशारा कुर्आन मजीद में है और हदीस शरीफ में इन महीनों की वज़ाहत है, वह यह हैं मुहर्रम, रजब, ज़ीक़ादा, जिलहिज्जा इसीलिए मुहर्रम को मुहर्रमुल हराम कहा जाता है। इस महीने की दस तारीख़ बहुत ही बा बरकत है इसी को आशूरा का दिन कहते हैं। रमज़ान के रोज़ों की फर्जियत से पहले मुसलमानों पर आशूरा का रोज़ा फर्ज़ जैसा था। जब रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हुए तो आशूरा का रोज़ा फर्ज़ न रहा बल्कि सुन्नत हो गया। रिवायत में आता है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत करके मदीना तय्यिबा आए तो देखा कि यहां के यहूदी आशूरा के रोज़ रोज़ा रखते हैं, उनसे पूछा गया कि तुम लोग इस दिन रोज़ा क्यों रखते हो, जवाब मिला कि इसी रोज़ हज़रत मूसा अ0 को अल्लाह ने समन्दर में रास्ता देकर फिरऔन के मज़ालिम से नजात दी थी और फिरऔन को उसके लशकर समेत समन्दर में डुबो दिया था इसलिए हम लोग शुक्र के तौर पर इस रोज़ रोज़ा रखते हैं। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हमको यहूद के मुकाबले में ज़्यादा हक़ है कि हज़रत मूसा अ0 पर इस इनआम के शुक्रिया में रोज़ा रखें चुनांचि आपने खुद आशूरा का रोज़ा रखा और सहाब–ए–किराम को इसकी तरगीब दी। सहाब–ए–किराम बड़े ही एहतिमाम से यह सुन्नत अदा फरमाते थे और अपने बच्चों से भी आशूरा के दिन रोज़ा रखवाते थे।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 11 हिजरी में मुहर्रम के बाद फरमाया कि अगर मैं ज़िन्दा रहा तो आइन्दा 10 के साथ 9 या 11 का रोज़ा मिला कर रखूँगा ताकि यहूद के रोज़े से फर्क़ हो जाए मगर अगले मुहर्रम से पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात हो गई। मगर उलमा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस रिवायत की बुनियाद पर कहा है कि अकेले 10 मुहर्रम का रोज़ा रखना मकरूहे तन्ज़ीही है लिहाज़ा अच्छा यही है कि 10 के साथ 9 या 11 को भी रोज़ा रख लिया करें। अगर कोई दुशवारी हो तो 10 मुहर्रम के रोज़े की सुन्नत न तर्क करें। बाज़ उलमा ने यह नुक्ता भी बयान किया है कि अब यहूद यह रोज़ा सिरे से रखते ही नहीं हैं इसलिए अब सिर्फ 10 मुहर्रम को रोज़ा रखने में कोई कराहत न होगी, वल्लाहु आलम, मगर अच्छा यही है कि 10 के साथ 9 या 11 का रोज़ा मिला लें।

अल्लाह की मर्ज़ी आशूरा के दिन कर्बला का वाकिआ पेशं आ गया गौर करें ईद का दिन सबके नज़दीक खुशी

का दिन है लेकिन कितने लोग ऐसे होंगे कि ऐन ईद के दिन उनके किसी क़रीबी अज़ीज का इन्तिकाल हो गया होगा और ईद की ख़ुशी ग़मी में तब्दील हो गई होगी। लेकिन क्या इस ग़मी ने ईद के दिन की हमेशा की खुशी को ख़त्म कर दिया होगा हरगिज़ नहीं, इस्लाम में गमी का दिन मनाने की तालीम नहीं दी गई है, चुनांचि सैय्यिदुश्शुहदा हम्जा की शहादत का दिन कोई नहीं मनाता इसी तरह शुहदाए बद्र और उहद की शहादत का दिन कोई नहीं मनाता, शुहदाए बिअ्रे मऊना की शहादत का दिन कोई नहीं मनाता, हज़रत उमर फारूक़ ,हज़रत उस्मान ग़नी, और हज़रत अली रज़ि0 की शहादत का दिन कोई नहीं मनाता तो फिर हादिस–ए–करबला की याद क्यों हर साल मनाई जाती है। इसमें शक नहीं कि यह हादिसा भी दूसरे मुतअदिद हादिसात की तरह बड़ा ही दर्दनाक और अलमनाक है मगर हर साल उस की याद मनाना इस्लामी तालीमात में से नहीं है।

चूंकि एक फ़िर्क़े ने इसमें इतना प्रोपेगण्डा किया है कि बर्रे सग़ीर का शायद ही कोई शहर या गाँव ऐसा होगा जहां करबला के अलमनाक हादिसे को मुहर्रम में न याद किया जाता हो, इस सिलसिले में 90 फीसद अवाम हादिसे के बारे में सही मालूमात नहीं रखते इसलिए हम ज़रूरी समझते हैं कि हर साल वाक़िये की सही सूरते हाल इख़्तिसार के साथ अपने पाठकों के सामने रख दिया करें।

हादिस–ए–करबला–

हज़रत मुआविया रज़ि0 ने अपने आखिर ज़माने में आइन्दा के हालात के पेशे नज़र अपने बाद के लिए अपने बेटे यजीद को वली अहद मुकर्रर करके उसका एलान कर दिया उस वक्त सहाबा की ख़ासी तादाद मौजूद थी सबने इसे खुशी से या मसलहत के पेशे नज़र मान लिया लेकिन पाँच सहाबा ने इसे तस्लीम न किया वह हैं अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र, हुसैन बिन अली, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि01 हज़रत मुआविया रज़ि0 सहाबी–ए–रसूल थे। कातिबे वही थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बिरादरे निस्बती थे (उम्मुल मोमिनीन हज़रत हबीबा के भाई थे) उन्होंने अपने इजतिहाद से जो कुछ किया सही किया, दूसरे सहाबी–ए–रसूल को उनसे इख़तिलाफ का हक था लेकिन इसे देख कर हममें से किसी को हक़ नहीं कि हज़रत मुआविया या किसी भी सहाबी की शान में बद गुमानी के कलिमात कहें अगर हम ऐसा करेंगे तो बड़ा गुनाह करेंगे।

22 रजब 60 हिजरी को हज़रत मुआविया रज़ि0 की वफात हो गई, यजीद तख़्त पर बैठा, उस वक्त भी लगभग 60 सहाबा मौजूद थे सब ने खुशी से या मसलहत के पेश नजर उसकी ख़िलाफत मान ली, उस वक्त हज़रत हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अनहुमा मदीना मुनव्वरा में मुक़ीम थे उन से भी यजीद की बैअत तलब की गई दोनों हज़रात ने बैअत से हीला किया और रातोंरात मक्का मुकर्रमा चले गये।

मक्का मुकर्रमा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने अपनी ख़िलाफत की राह हमवार करना शुरु की, उधर कूफा वालों ने तै किया था कि वह यजीद की बैअत तोड़ दें और हज़रत हुसैन रज़ि० को अपना अमीर बना लें इस गरज से कूफियों ने हज़रत हुसैन रज़ि० के पास अपने कासिदों के ज़रिए खुतूत लिख कर कूफा आने की दावत दी और इस सिलसिले में कूफियों ने हज़रत हुसैन की ख़िदमत में खुतूत के अम्बार लगा दिये यहां तक की हज़रत हुसैन उनकी जानिब मायल होगये और हालात का जायज़ा लेने के लिए अपने चचा ज़ाद भाई मुस्लिम बिन अकील को कूफ़ा भेज दिया हज़रत मुस्लिम बिन अकील कूफा पहुंचे तो उनके हाथ पर हज़रत हुसैन की बैअत के लिए लोग टूट पड़े और एक तारीखी रिवायत के मुताबिक़ चालीस हज़ार कूफ़ियों ने हज़रत मुस्लिम के हाथ पर हज़रत हुसैन रज़ि० के लिए बैअत की, बाज़ रिवायत में 18 हज़ार की तादाद बयान की गई है। यह हाल देख कर मुस्लिम ने हज़रत हुसैन को लिखा कि तशरीफ़ लाएं यहां हालात आपके हक़ में हैं, इस खबर पर हज़रत हुसैन रज़ि० कूफा जाने की तैयारी करने लगे। अहले मक्का को इल्म हुआ तो सबने मिन्नत व समाजत से हज़रत को कूफ़ा न जाने और कुफ़ियों पर एतिबार न करने की दरख़्वास्त की रोकने और समझाने वालों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर जैसे सहाबी थे। लेकिन हज़रत हुसैन पुख़्ता इरादा कर चुके थे वह 8 ज़िलहिज्जा को घर की औरतों, घर के लोगों और खानदान के कुछ नौजवानों के साथ रवाना हो गये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने बहुत समझाया कि अगर आप नहीं मानते तो कम से कम यह मान लीजिए कि औरतों और बच्चों को न ले जाइऐ मगर मुकद्दर को कौन बदल सकता था आप औरतों और बच्चों के साथ रवाना हो गये।

उधर कूफे का हाल यह हुआ कि जब वालिये कूफा को मुस्लिम की आमद और उनके हाथ पर भारी तादाद की हज़रत हुसैन के लिए बैअत का इल्म हुआ तो उसने कूफ़ियों पर सख़्ती की और मुस्लिम बिन अक़ील को गिरफ़्तार करके शहीद कर दिया। यह गलत है कि मुस्लिम बिन अक़ील के साथ उनके दो मासूम बच्चे भी थे, जैसा कि मीर अनीस ने लिखा है।

हज़रत हुसैन अपने काफ़िले के साथ रास्ते में थे कि मुस्लिम बिन अक़ील की अलमनाक शहादत की ख़बर मिली बड़ा ग़म हुआ करीब था कि कूफा का सफर तर्क कर दिया जाए, कि मुस्लिम के घर वालों ने कहा हम तो वापस न होंगे बल्कि बदला लेंगे, हज़रत हुसैन रज़ि० पर भी कुछ ऐसा ही रद्दे अमल हुआ और न जाने क्या हालात थे कि इस ख़तरनाक हाल में भी औरतों के साथ सफर जारी रखा गया।

आगे बढ़ने पर इब्ने ज़ियाद की जानिब से हज़रत हुर एक हज़ार फ़ौज लेकर सामने आए और हज़रत हुसैन

रज़ि0 का रास्ता रोका कि आप कूफ़ा नहीं जा सकते, ज़ुहृ की नमाज़ का वक़्त था, हज़रत हुसैन रज़ि0 ने इमामत की। हुर और उसकी फौज़ ने हज़रत हुसैन रज़ि0 के पीछे नमाज़ अदा की, नमाज़ के बाद बाहम गुफ़्तुगू हुई हज़रत हुसैन रज़ि0 ने फ़रमाया, तुम लोगों के बुलाने पर मैं आया हूं, और खुतूत दिखाए, हुर ने कहा इन खुतूत का हम से कोई तअल्लुक नहीं है हम को हुक्म है कि आपको कूफ़ा न जाने दें। हज़रत ने फरमाया तो फिर हम वापस जाते हैं। हुर ने कहा यह भी नहीं हो सकता, आप न हिजाज़ की जानिब चलें न कूफ़ा की जानिब, किसी और जानिब चलें और आप यजीद को लिखें मैं इब्ने जियाद को लिखता हूं शायद कोई हल निकले। हज़रत हुसैन रज़ि0 की गैरत ने गवारा न किया कि वह यजीद को लिखे और एक तरफ को काफिला चल दिया हुर अपनी फौज के साथ–साथ था। जब करबला पहुंचे तो उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का हुक्म आ गया कि अब वहीं रोक दो, वहीं एक तरफ हुसैनी काफिला ख़ेमा ज़न हो गया दूसरी तरफ़ फासिले पर हुर की फौज़ खेमा जन थी। यह दो मुहर्रम 61 हिज़री थी। बड़ा नाजुक वक्त था। दोनों जानिब से गुफ़्तगू शुरु हुई, हज़रत हुसैन रज़ि0 ने तीन बातें रखीं–

1. हम जहां से आए हैं वहीं वापस जाने दिया जाए।

2. या हमको यजीद के पास जाने दिया जाए हम वहां अपना मुआमला खुद हल कर लेंगे।

3. हम को किसी सरहद की जानिब जाने दिया जाए। मगर बद बख़्त उबैदुल्लाह बिन जियाद ने एक न मानी और उसने मुतालबा किया कि मेरे हाथ पर यजीद के लिए बैअत करें या फिर नतीजे के लिए तैयार हो जाएं। हज़रत हुसैन रज़ि0 के सामने हज़रत मुस्लिम का वाकिआ था, वह इस पर राज़ी न हुए और आख़िर कार उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने चार हज़ार यजीदी फौज़ भेज कर आपका घेरा तंग कर दिया, 10 मुहर्रम को हज़रत हुसैन रज़ि0 के 72 जाँनिसार साथियों ने बड़ी बहादुरी से यज़ीदी फौज का मुकाबला किया पांच हज़ार की फ़ौज से यह 72 भूखे प्यासे कहां तक मुकाबला करते। अल्लाह तआला ने सब को शहादत से नवाजा। आखिर में हजरत हुसैन रज़ि0 भी शहीद हो गये इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हज़रत हुसैन के बीस साला साहबज़ादे हज़रत जैनुल आबिदीन बीमार थे वह और औरतें कूफा लाए गये, इब्ने ज़ियाद ने हज़रत हुसैन रज़ि0 के सर के साथ गुस्ताख़ी की एक सहाबी ने सख़्त नकीर की फिर ये काफ़िला दमिश्क यजीद के पास भेजा गया यज़ीद ने इस पर ग़म का इज़हार किया बल्कि आँसू भी टपकाए, उबैदुल्लाह को बुरा कहा उस पर लानत की, फिर यह काफिला लगभग एक माह यजीद का मेहमान रहा सबको बड़ी इज़्ज़त व तौक़ीर के साथ रखा फिर बड़े एजाज़

और हदाया व तहाइफ़ के साथ मदीना तय्यिबा भेजवा दिया। यह था करबला का मुख़्तसर वाकिया। अब हम अपने पाठकों की खिदमत में इस सिलसिले की एक नज़्म पेश करते हैं।

था लिखा बस तख़्त पर बैठा यज़ीद
अपनी क़िस्मत का लिखा भुगता यज़ीद
करबला का वाक़िआ तो सख़्त था
ह़र्रा भी सख़्ती में उससे कम न था
मक्के पर हमला भी कितना सख़्त था
अम्न की जा ख़ौफ़ लाना सख़्त था
चार साला दौर में यह सब हुआ
हिजरी चौंसठ में वह आख़िर मर गया
जिसकी क़िस्मत में शहादत थी लिखी
आख़िरश उसको शहादत मिल गई
जिसकी क़िस्मत में जहन्नम थी लिखी
उसके अमलों से जहन्नम लिख गई
चूंकि सब आमाल का वां इल्म था
इसलिए तक़्दीर में यह सब लिखा
मानना तक़्दीर का लाज़िम हुआ
पर नहीं तक़्दीर कोई जानता
हुक्मे रब जो है मिला वह हम करें
और नतीजे को लिखे पर छोड़ दें
गुफ़्तगू इस में ज़्यादा है खता
आ़रिफों ने है यही नुक्ता लिखा

❖❖❖

हैं जन्नत में दोनों हसन और हुसैन रज़ि०

हैं महबूब रब के हसन और हुसैन
हैं महबूब सब के हसन और हुसैन
ख़ुदा उनसे राज़ी वह राज़ी ख़ुदा से
हैं क्या शान वाले ह़सन और हुसैन
नबी के चहीते अली के ह़बीब
जिगर फातिमा के ह़सन और हुसैन
अबू बक्रो फ़ारूक़ो उस्मां ग़नी
थे सबके दुलारे ह़सन और हुसैन
सहाबा सभी तो हैं मह़बूब रब के
उन्हीं में हैं दोनों ह़सन और हुसैन
वह नाना की उम्मत में मह़बूब हैं
हैं महबूब हमको ह़सन और हुसैन
शहीद एक सम से तो इक तेग़ से
हैं जन्नत में दोनों ह़सन और हुसैन
वहां वह जवानों के सरदार हैं
ये रुत्बा हैं रखते ह़सन और हुसैन
मगर तअ़ज़िया है ये बिदअ़त बुरी
नहीं इस से राज़ी ह़सन और हुसैन
ये नौह़ा ये मातम अ़लम के जुलूस
बरी इन से दोनों ह़सन और हुसैन
हमेशा रहे दोनों बिदअ़त से दूर
थे नाना के पैरो ह़सन और हुसैन
हो रहमत की बारिश नबी पर सदा
रहें उसमें शामिल ह़सन और हुसैन

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

ख़ैबर का वाक़िआ–

मुहर्रम सन सात हिजरी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खैबर का रुख़ किया, इसका मक़सद सिर्फ यहूदियों की उस कूव्वत पर पाबन्दी लगाना था जो मदीने से निकल निकल कर ख़ैबर में जमा हो गई थी, इसके अलावा हिजाज़ व नज्द के दरमियान उत्तर और अरबद्वीप के बीच रहने वाले एक बड़े ताक़तवर क़बीले ग़तफान की तरफ से भी इतमीनान कर लेना था, जो अरबी कबीलों का एक निहायत जंगजू और ताक़तवर समूह था, उसकी तरफ से इतमीनान किये बग़ैर मक्के के दुश्मनों के ख़तरात पर क़ाबू पाना दुश्वार था, ख़ैबर यहूद का जंगी अड्डा बन रहा था और अब अरब द्वीप में उनका यह आख़िरी क़िला बन गया था, उसमें मदीने से निकल कर यहूदी लीडर इस्लाम दुश्मन लोगों को मश्वरों और सहयोग से फाइदा पहुंचाने के लिए बराबर कोशिश में रहते थे, और यहां अपने केन्द्र से बराबर साज़िशें करते रहते थे और उनके साथ क़बीले ग़तफान के लोग भी मदीने पर हमले की तैयारी कर रहे थे और यह लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सख़्त कीना रखते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर पहुंच कर एक एक क़िले को पराजित किया, आख़िरी क़िला जिसको ज़ेर (पराजित) करना था, आसान न था उसके लिए आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली इब्ने अबी तालिब का इन्तख़ाब किया, और उनकी क़ियादत में मुसलमानों ने उस क़िले को फतह किया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको झण्डा देने से पहले यह वसीयत की थी कि उनके सामने पड़ाव डालना फिर उनको इस्लाम की दावत देना और अल्लाह का इस सिलसिले में उन पर जो हक़ है उससे उनको आगाह करना। ख़ुदा की क़सम अगर तुम्हारे ज़रिये अल्लाह तआला एक आदमी को भी हिदायत दे दे, तो यह तुम्हारे लिए सुर्ख़ ऊँटों से भी ज़्यादा बेहतर है।

आख़िरकार एक के बाद दूसरा क़िले पर क़िला फ़तह होता गया और कई कई दिन टकराव और घेराव में गुज़रे यहां तक कि इस सूरते हाल से आजिज़ हो कर यहूदियों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सुलह की पेशकश की, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों को ख़ैबर में क़ियाम की इजाज़त दे दी, इस शर्त पर कि वहां की पैदावार ग़ल्ला और फलों का आधा हिस्सा मुसलमानों का होगा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक चाहेंगे यह मुआहिदा बरक़रार रखेंगे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदावार की तक्सीम (बटवारे) के लिए उनके पास अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि0 को भेजा करते थे, वह वहां की पैदावार की मिक्दार का अंदाजा करके उसको दो हिस्सों में बांट देते, फिर उनसे कहते कि इसमें से जो हिस्सा चाहें ले लें वह लोग यह देख कर कहते कि इसी अदा (इन्साफ) पर आसमान व ज़मीन थमें हुए हैं।

इसी मौके के दौरान आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़हर दिया गया। हुआ यह कि सलाम बिन मिश्कम यहूदी की बीवी ज़ैनब बिन्त हारिस ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़हर मिला कर एक भुनी हुई बकरी का तोहफ़ा भेजा उसमें ज़हर मिला हुआ था, आपने चखते ही मालूम कर लिया और नहीं खाया मगर उसका कुछ असर आप पर ऐसा पड़ा की कुछ मुद्दत बाद उसका असर ज़ाहिर हुआ।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ैबर की फ़तह से फ़ारिग़ हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़िदक की तरफ तवज्जह फरमाई, वहां भी यहूदियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आधे आधे पर मुसालिहत करनी चाही, आपने उनकी पेशकश क़बूल कर ली, इससे जो हासिल होता था आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसको अपने और मुसलमानों के मफ़ाद में जहां मुनासिब समझते तक्सीम फ़रमा देते। इसलिए कि बिला मुक़ाबला और टकराव के सिर्फ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात कर लेने पर जो माले ग़नीमत हासिल होता उसके लिए इस्लाम का हुक्म यह था कि उस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ही मालिकाना इख़्तियार होगा।

इसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वादिये कुरा तशरीफ़ ले गये यह ख़ैबर और तैमा के दरमियान एक नई आबादी थी, लड़ना नहीं था आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको इस्लाम की दावत दी और इरशाद फ़रमाया कि अगर वह इस्लाम क़बूल कर लेंगे तो उनका माल व जान महफूज़ रहेगा और उनका हिसाब अल्लाहतआला के ज़िम्मे होगा, मगर यहूद पहले से लड़ने के लिए तैयार थे उन्होंन फ़ौरन तीर अंदाजी शुरु कर दी और जंग शुरु हो गई लेकिन थोड़े मुकाबले के बाद यहूद ने सिपर डाल दी और ख़ैबर की शर्तों के मुताबिक सुलह हो गई।

जब तैमा के यहूदियों को मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर वालों, फिदक वालों और वादिऐ कुरा वालों से यह मामला फरमाया है तो उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुसालिहत कर ली और उनका माल जायदाद उन्हीं के क़ब्ज़े में रहा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीने वापस तशरीफ ले आए[1]।

---

1. ज़ादुल मआद 3/355

शेष पृष्ठ................18 पर

–देवनागरी लिपि में उर्दू

मारक-ए-ईमान व माद्दीयत (ईमान और भौतिकता की लड़ाई)

–मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 –लिपिः मो0 मुहम्मदुल हसनी रह0

पिछले अंक से आगे...............

इब्ने कसीर का बयान है कि यह अल्लाह तआला की ख़बर है, जो उसने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अस्हाबे कहफ के गार में मुद्दते कियाम की बाबत दी है जब से उन पर नींद मुसल्लत की गई, यहां तक कि अल्लाह तआला ने उनको बेदार किया और अहले जमाना को उनके हाल से आगाह किया, उसकी मिक्दार तीन सौ साल थी जो कमरी हिसाब से नौ साल ज़्यादा बैठती है और शम्सी हिसाब से तीन सौ सात होती है, इसलिए कि हर सौ साल में कमरी व शमसी तक्वीम में तीन बरस का फर्क़ वाक़े हो जाता है इसी लिए तीन सौ का ज़िक्र करने के बाद इरशाद हुआ कि नौ साल बढ़ा ले।

इन्साइक्लोपीडिया का जो इकतिबास ऊपर गुज़रा है उसमें और गबन की किताब में नीज़ तफ्सीर व तारीख़ की अकसर किताबों में आम तौर पर यही बात लिखी गई है कि अस्हाबे कहफ़ के ग़ार में पनाह लेने का वाकिआ रूमी बादशाह देसिस के ज़माने में पेश आया, जिसको अरब मुअर्रिखीन और उलमाए इस्लाम आम तौर पर दक्यानूस कहते हैं वह बादशाह अपनी सख़्त गीरी और अपने तअस्सुब व मजालिम में बहुत मशहूर था दूसरी बात यह कही गई है कि अस्हाबे कहफ के जुहूर का वाकिआ साहिबे ईमान ईसाई बादशाह थ्योदोसिस दोम के ज़माने में पेश आया यहां यह इश्काल पैदा होता है कि इन दोनों बादशाहों का दरमियानी वक्फ़ा ज़्यादा से ज़्यादा दो सौ साल है, इसी बुनियाद पर गबन ने इस मुद्दत का मज़ाक उड़ाया है जिस का ज़िक्र कुर्आन मजीद में आया है, बाज कदीम व जदीद मुफस्सिरीन ने इस इश्काल से बचने के लिए यह राय ज़ाहिर की कि कुर्आने मजीद में जो यह आया है कि वह रहे अपने गार में तीन सौ साल और उस पर नौ साल ज़्यादा वह अल्लाह तआला का इरशाद नहीं है बल्कि यह बात अहले किताब की तरफ मन्सूब करके कही गई है और इसका तअल्लुक सिर्फ उनके कियासात व अन्दाजों से है और यह बात अलग और मुस्तकिल बिज़्ज़ात नहीं बल्कि उसका जोड़ उन मासबक़ आयात से है जिनमें यह कहा गया है कहेंगे यानी अहले किताब तीन हैं चौथा उन का कुत्ता है इस कौल को कतादा और मुतरिफ़ बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 अन्हुमा की तरफ भी मन्सूब किया गया है और उसमें यह किरअते शाज़्ज़ा भी मरवी है। "और वह लोग ठहरे अपने ग़ार में तीन सौ नौ बरस" इस कौल को तरजीह देने वालों ने

अल्लाह तआला के इस क़ौल से इस्तिदलाल किया है जो उसके फौरन बाद है "कह दीजिए अल्लाह ज़्यादा जानता है जितनी मुद्दत वह रहे अल्लाह ही के इल्म में आसमानों और ज़मीन का गैब है" वह कहते हैं कि अगर मुद्दत का तअय्युन अल्लाह तआला की तरफ से था तो आगे की आयत में उसको इल्मे इलाही के हवाले करने की ज़रूरत न थी, यही तफ़्सीर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से भी मन्सूब है लेकिन अल्लामा आलूसी ने लिखा कि है यह बात हिब्र (यानी इब्ने अब्बास) रज़ि0 से इसलिए दुरुस्त नहीं कि अस्हाबे कहफ की तादाद उन्होंने सात ही लिखी है हालांकि उसके बाद भी यह आयत है कि "कह दीजिए कि अल्लाह तआला उनकी तादाद को ज़्यादा बेहतर जनता है "इसलिए कि दूसरी जगह है, कह दीजिए अल्लाह ज़्यादा जानता है जितनी मुद्दत वह रहे" इस आखिर की आयत के मआना के लिहाज़ से कोई फर्क़ नहीं और दोनों में एक ही बात कही गई है पस वह इस मौक़े पर इसका हवाला क्यों कर दे सकते हैं? जब कि पहले मसअले में उन्होंने खुद इसको इख़्तियार नहीं किया।

बाज़ और मुम्ताज़ उलमा ने भी इस नजरिये की तरदीद की है उनका कहना यह है कि अरबी ज़बान का ज़ौक़े सलीम इससे इन्कार करता है और अगर आदमी को पहले इस तावील या इस तफ्सीर का इल्म न हो तो उसका ज़िहन खुद से इस बात की तरफ मुन्तकिल नहीं होता। इमाम राज़ी लिखते हैं "अल्लाह तआला का यह कौल "वह कहेंगे तीन हैं चौथा उनका कुत्ता" बहुत ही पहले गुज़रा है उसके और इस आयत के दरमियान जो आयत है उससे मालूम होता है कि दोनों का एक दूसरे से कोई तअल्लुक़ नहीं। "पस न झगड़ा करो उसमें मगर जाहिरी तौर पर" इस आयत "कह दीजिए अल्लाह ज़्यादा जानता है जितनी मुद्दत वह रहे, उसी के इल्म में है आसमानों और ज़मीन का गैब" से यह साबित नहीं होता कि इससे पहले कोई हिकायत हो इसलिए कि उससे अल्लाह तआला की मुराद सिर्फ यह है कि अहले किताब जो यह कहते हैं उसको छोड़ कर अल्लाह की दी हुई ख़बर पर एतिमाद करो।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया ने लिखा है कि "अल्लाह ज़्यादा जानता है उनके ठहरने की मुद्दत को" की बुनियाद पर बाज़ मुफस्सिरीन का ख़्याल है कि अहले किताब का कौल है हालांकि यह बात दुरुस्त नहीं अल्लाह तआला ने यह बात अहले किताब की तरफ मन्सूब नहीं की बल्कि यह खुद अल्लाह तबारक व तआला ही का कलाम है।

हमें अपने ज़िहन में यह बात फिर ताज़ा कर लेनी चाहिए कि इस इश्काल और फर्ज़ करदा तज़ाद व इख़्तिलाफ जो हमें कुर्आन की बयान करदा मुद्दत और गबन की इस तादाद के दरमियान नज़र आता है जो रूमी तारीख़ के जाइज़े की रौशनी में लिखी गई है) की बुन्याद यह शुहरत है, कि उन नौजवानों की यह रूपोशी और ग़ार में

पनाह लेने का वाकिआ "डेसिस" के ज़माने में पेश आया जिसकी मुद्दते हुक्मरानी सितम्बर 249 ई0 से लेकर जून 251 ई0 तक है शायद जिस चीज़ ने उसको इस किस्से का हीरो बना दिया वह उसकी कसावत व खूंरेज़ी ईसाइयों पर उमूमी मजालिम और सरकारी हुक्काम के सामने बुतों के लिए कुर्बानी और जबीहों पर इसरार और उनसे सनदे एतिराफ़ लेने का हुक्म है लेकिन जो चीज़ इस वाकिऐ में शक पैदा कर रही है वह यह है कि इस बादशाह की हुकूमत का ज़माना बहुत मुख़्तसर था उसको दो साल भी आजादाना हुक्मरानी का मौक़ा न मिल सका, और यह मुद्दत भी ज़्यादा तर क़ौम (GOTHS) के साथ मुसलसल जंगों में गुजरी और वह फ्राँस में राइन नदी के किनारे उन्हीं के हाथों मक्तूल हुआ इसका बहुत कम इम्कान है कि उसको इस क़लील मुद्दत में इस अजीम व वसीअ़ सलतनत के ताबे दूसरे मश्रिक़ी यूनानी शहरों के दौरे का मौक़ा मिला हो, तारीख़ में यूनान और मश्रिक़ी सलतनत में उसके सफर का सुराग बहर हाल नहीं मिलता THE HISTORIANS HISTORY OF THE WORLD में है कि डेसिस का ज़माना बहुत मुख़्तसर और पुर सुकून था, हुकूमत संभालते ही उसको एक बग़ावत की सरकोबी के लिए "ग़ाल" की तरफ रुख़ करना पड़ा। उसका कुल ज़मान–ए–हुक्मरानी गोथ के साथ जंग में गुज़रा।

मुअर्रिखीन ने उन ईसाई रहनुमाओं के नाम भी दर्ज किये हैं जिनको बादशाह ने फरमाने शाही से सरताबी के जुर्म में सजाएं दीं। इसमें अस्हाबे कह्फ का कहीं ज़िक्र नहीं है इन सजा याफ़्ता ईसाईयों की तादाद भी कुछ ज़्यादा न थी खुद गबन ने लिखा है कि सजा पाने वाले मज़लूमों की तादाद दस मर्दों और सात औरतों से ज़्यादा न थी।

दूसरी बात यह है कि चन्द ईसाईयों की रूपोशी एक मकामी किस्म का वाकिआ था और उस वक्त उसको इतनी अहमियत हासिल न थी कि मुअर्रिख उसकी तरफ तवज्जोह करते और मुसन्निफ अपनी किताबों में उसका ज़िक्र करते, उसके बर ख़िलाफ़ इस तवील और खारिक़े आदत नींद के बाद उनकी बेदारी, फिर उनकी शहर में आमद मजहबी हल्कों में उसकी सदाए बाज गश्त और आफाक़े आलम में उसकी शुहरत एक बिल्कुल ग़ैर मामूली और अजीब व गरीब वाकिआ था, चुनांचि यह दूसरा वाकिआ यानी उनकी बेदारी और थ्योडेसिस के ज़माने में ईसाई दुनिया में इस खबर की शुहरत व तवातुर इस किस्म के वाकिआत में से था जो हर शख़्स की ज़बान पर होते हैं, और कोई मज्लिस व महफिल उनके तज्किरे से खाली नहीं होती और जिन की गूंज दुनिया के गोशे गोशे में पहुंचती है, मुअर्रिख भी उसको कलम बन्द करने के शाइक नजर आते हैं और रावी व नाकिल भी उसकी नक़्ल व हिकायत में एक दूसरे से सबकत ले जाना चाहते हैं

शेष पृष्ठ................18 पर

पांचवें खलीफ़-ए-राशिद हज़रत हसन रज़ि0

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

हज़रत हसन रज़ि0 की पैदाइश रमज़ान 3 हिज़री में मदीना मुनव्वरा में हुई, वालिदे माजिद हज़रत अली और वालिदा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की छोटी बेटी हज़रत फातिमा ज़हरा रज़िअल्लाहु अन्हुम हैं।

आठ साल की उम्र तक नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत और उनके प्यार का लुत्फ पाते रहे, बड़े होने पर आपने बड़े कारनामे अंजाम दिये, हज़रत उस्मान रज़ि0 का घर जब जालिमों ने घेरा तो आप उनके दरवाज़े पर पहरा दे रहे थे, जंगे जमल और सिफ्फीन में अपने वालिद साहब के साथ रहे।

हज़रत अली रज़ि0 को बदबख़्त अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम ने ऐसा ज़ख़्म लगाया था कि आप का बचना मुश्किल था, लोगों ने आपसे आप के बाद खिलाफत के लिए हज़रत हसन के बारे में पूछा आपने फरमाया मुसलमान जिसे चाहेंगे खलीफा चुनेंगे, चुनांचि हज़रत अली रज़ि0 की शहादत के बाद अहले मदीना ने हज़रत हसन रज़ि0 को ख़िलाफ़त के लिए चुन लिया।

हज़रत अली रज़ि0 के ज़माने में हज़रत मुआविया रज़ि0 से जंगें चलती रहीं, हज़रत अली रज़ि0 की शहादत के बाद जल्द ही हज़रत मुआविया ने इराक़ पर हमला कर दिया, मुकाबले के लिए हज़रत हसन रज़ि0 ने भी फौज रवाना की, हज़रत हसन रज़ि0 भी फौज के मुकाबले के लिए निकले, मदाइन पहुंच कर आपकी फौज़ ने ग़द्दारी की यहां तक की आप का खेमा लूट लिया जिस फर्श पर आप बैठे थे उसे छीन लिया यह रंग देख कर हज़रत मुआविया से सुलह के लिए आमादा हो गये। हज़रत हसन रज़ि0 ने अपनी फौज के सामने तकरीर की और हालात के तहत अपने ख़्यालात का इज़हार किया आपकी फौज़ के लोग आप से गुस्ताख़ी पर आमादा हो गये एक शख़्स ने तो आप को जख़्मी कर दिया आप किसी तरह मदाइन पहुंचे और ज़ख़्म ठीक होने पर वहीं से दोबारा फिर मुकाबले के लिए निकले। आपकी फौज ने फिर ग़द्दारी की और शामी फौज की चाल का शिकार हो गई और लड़ने से इन्कार कर दिया। हज़रत हसन रज़ि0 बड़े नर्म दिल और सुलह पसन्द थे, हजरते उस्मान रज़ि0 की शहादत के बाद मुसलमानों के कुश्त व खून से बेजार थे इसलिए मौजूदा हालात में वह सुलह के लिए तैयार हो गये। हज़रत मुआविया को जब मालूम हुआ तो वह भी बख़ुशी तैयार हो गये और एक सादे कागज़ पर दस्तख़त करके हज़रत हसन रज़ि0 को भेज दिया। और कहलाया कि जो शर्तें चाहें लिखें सब मन्जूर होंगी। आपने सुलह की शराइत लिख कर हज़रत मुआविया रज़ि0 को भेज दीं। वह शराइत

बाज़ तारीखों में इस तरह हैं–

1. किसी इराक़ी को पुरानी अदावत की बिना पर न पकड़ा जाय।

2. बिला इस्तिस्ना (किसी को अलग किये बिना) सब को अमान दी जाय।

3. अहले इराक़ की बद ज़बानियों (बुरा कहने) को अंगेज़ (सहन) किया जाय।

4. दारुल जबरद का पूरा खिराज हज़रत हसन रज़ि0 के लिए मख़सूस कर दिया जाए।

5. हज़रत हसन रज़ि0 को दो लाख सालाना दिये जायें।

6. वजाइफ (अनुदान) में बनी हाशिम को बनी उमय्या पर तरजीह (वरीयता) दी जाए।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ि0 ने यह तमाम शरतें कुछ भी रद्दोबदल के बिना मान लीं, और इकरार नामा लिख कर उस पर मुहर लगाई और कुछ बड़े लोगों की गवाही लिख कर उबैदुल्लाह बिन आमिर के ज़रीए हज़रत हसन रज़ि0 को भेज दिया और बाद में इस पर पूरा पूरा अमल किया।

कुछ तारीख़ लिखने वालों ने कुछ बुरे लोगों की गलत बातें लिख कर हज़रत अमीर मुआविया से बदजनी पैदा करने की कोशिश की है उनसे होशियार रहना चाहिए और किसी भी सबब से बद जुबानी करके अपनी आखिरत न खराब करना चाहिए।

बाज़ किताबों में एक शर्त यह भी लिखी गई है कि हज़रत मुआविया रज़ि0 की वफात के बाद हज़रत हसन खलीफा होंगे लेकिन यह शर्त कुछ लोगों ने गढ़ ली है जिसका ज़िक्र न तबरी ने किया है न याकूबी ने और न इब्ने कसीर ने, यह बात सिर्फ हज़रत हसन रज़ि0 को ज़हर दिये जाने को हज़रत मुआविया रज़ि0 के सर थोपने के लिए गढ़ी गई है *(देखिए शाह मुईनुद्दीन नदवी की तारीखे इस्लाम अव्वल पेज 254)।

यजीद की वली अहदी की मुखालिफत करने वाले पांचों सहाबा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर, हज़रत हुसैन बिन अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 में से कभी किसी ने हज़रत हसन रज़ि0 को ज़हर देने का इलजाम हज़रत मुआविया रज़ि0 को नहीं दिया।

इस सुलहनामे के बाद जंग बन्द हो गई और हज़रत हसन रज़ि0 ने कूफा आ कर एक बड़े मजमें के सामने एलान किया–

० लोगो खुदा ने हमारे अगलों से तुम्हारी हिदायत और पिछलों से तुम्हारी खूंरेजी कराई, दानाइयों (बुद्धिमानी) में सबसे बड़ी दानाई तक़्वा (संयम) और इज्ज़ (कमज़ोरी) में सबसे बड़ा इज्ज़ बुरे काम हैं, यह ख़िलाफ़त हमारे और मुआविया के बीच झगड़े की बात है, या वह इसके वाकई हक़दार हैं, या मैं हूँ, दोनों सूरतों में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत की इस्लाह और तुम लोगों को खूंरेज़ी से बचाने के लिए इससे दस्त बरदार होता है।

इस सुलह और एलान के बाद फित्ना खत्म हुआ और हज़रत हसन रज़ि0 मदीना तय्यिबा आ गये और

यहीं अपने नाना के जवार में जिन्दगी गुजार दी, हज़रत हसन रज़ि0 रमजान 40 हिजरी में खलीफा हुए थे और रबीउल अव्वल में दस्त बरदार हुए इस तहर 6 माह आपकी खिलाफ़त रही। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस के मुताबिक खिलाफत तीस साल रहेगी उसके बाद बादशाहत आएगी, इस खिलाफत को खिलाफते राशिदा कहा गया है। इसकी बड़ी फजीलत है यह रबीउल अव्वल 41 हि0 में पूरी होती है। इस तरह हज़रत हसन रज़ि0 पांचवें ख़लीफ़ा राशिद हैं। बेशक हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज बड़े बुजुर्ग थे उनकी खिलाफत, खालिस इस्लामी तर्ज़ पर थी उसे लुग़त के लिहाज़ से खिलाफते राशिदा कह सकते हैं लेकिन हज़रत हसन रज़ि0 को नज़र अन्दाज़ करके उनको पांचवें खलीफा-ए-राशिद कहना सही नहीं है।

सन् 50 हिजरी में हज़रत हसन रज़ि0 की वफात का हादिसा पेश आया, आपको बहुत ही सख़्त किस्म का ज़हर दिया गया था, कहा जाता है कि यह ज़हर आपकी बीवी जादा बिन्त अशअ़त ने दिया था, यह भी कहा जाता है कि यह ज़हर हज़रत मुआविया रज़ि0 ने दिलवाया था लेकिन यह बिलकुल ग़लत है जैसा कि पीछे लिखा जा चुका है। जब आप पर ज़हर का असर हुआ तो हज़रत हुसैन रज़ि0 को बुला कर वाकिआ बताया, हज़रत हुसैन रज़ि0 ने नाम जानना चाहा मगर आपने फरमाया कि गुमान की बुन्याद पर किसी का नाम लेकर उसे क़त्ल करवाना सही नहीं समझो अगर वही क़ातिल है जिसका मेरा गुमान है तो अल्लाह तआला उससे बदला ले लेगा। ज़हर दिये जाने के तीसरे रोज़ वफात हो गई, सईद बिन आस मदीने के वाली ने बहुत बड़े मजमे के साथ जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और जन्नतुल बकीअ़ में अपनी माँ हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ि0 के पहलू में दफ़्न हुए इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

फ़ज़्ल व मकाम— हज़रत हसन रज़ि0 ने अपने वालिद हज़रत अली रज़ि0 से तरबियत पाई थी जिनका मकाम इल्म में बहुत ऊँचा था। इसलिए हज़रत हसन रज़ि0 इल्म व फ़ज़्ल में ऊँचा मकाम रखते थे फ़ुकहाए मदीना में वह बड़ा मरतबा रखते थे, आप ने हदीसें भी बयान की हैं जिनकी तादाद 13 हैं उनमें अकसर हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत की हैं, हज़रत आइशा रज़ि0 से भी आपने हदीस रिवायत की है।

तवाज़ो इन्किसार, सख़ावत, इस्तिग़ना, और हिल्म में आप ऊँचा मकाम रखते थे। इबादते खुदावन्दी में बड़ा इन्हिमाक था, फज्र की नमाज़ के बाद इशराक़ तक उसी जगह बैठे रहते, मिलने वाले मिलते रहते फिर इशराक़ पढ़ कर उम्मरहातुल मोमिनीन को सलाम के बाद घर जाते, कई हज मदीना मुनव्वरा से पैदल चल कर अदा किये।

शीओं के एक तब्के ने हज़रत अली रज़ि0 की रजअ़त का अकीदा इख़्तियार किया आपने उन पर सख़्त नकीर की। आप का सबसे

बड़ा कारनामा हदीसे नबवी है "मेरा यह बेटा सरदार है खुदा इसके ज़रीए मुसलमानों के दो गिरोहों में मेल कराएगा" के मुताबिक़ हज़रत मुआविया से सुलह है। अगरचे शीओं को यह बात पसन्द न आई और उन्होंने इस पर आपको मोमिनीन को ज़लील करने वाला, मोमिनीन का मुंह काला करने वाला जैसे अलफ़ाज कहे मगर आपने सब्र किया और जवाब में फरमाया कि मैंने मुसलमानों को बड़ी खूँरेज़ी से बचाया है।

औलाद— आपने आठ नरीना औलाद छोड़ी जो इस तरह हैं—

हसन मुसन्ना, ज़ैद, उमर, कासिम, अबू बक्र, अब्दुर्रहमान, तलहा, उबैदुल्लाह।

अल्लाह ताआला सब पर अपनी रहमत फरमाता रहे और हमको अहले बैत की महब्बत से नवाज़े। आमीन।

❖❖❖

जगनायक ....

हज़रत सफ़िया से निकाह—

ख़ैबर फतह करने के बाद हारे हुए यहूदियों की दिलदारी भी हुज़ूर सल्ल0 ने की, जिस तरह बनू क़ैनक़अ की की थी, यहूदी लीडर की साहबज़ादी हज़रत सफ़िया को बांदी से आज़ाद फरमाया और फिर अपनी ज़ौजियत में ले लिया, जिसका बहुत अच्छा असर पड़ा[1]।

---

1. सीरत इब्ने हिशाम 2/366, ज़ादुल मआद 3/339

❑❑

मारक-ए-ईमान...............

इस बुन्याद पर यह बात ज़्यादा करीने कियास है कि उन पर ज़ुल्म व ज़बरदस्ती और उसके बाद उनकी रूपोशी का वाकिआ शाह हेडरेन के ज़माने में पेश आया हो जिसने एक तवील अरसे तक हुक्मरानी की और तारीख से मालूम होता है कि वह मश्रिक़ी रियासतों का बहुत दिन तक जिसकी मुद्दत 129 ई0 से लेकर 134 ई0 तक फैली हुई है, दौरा करता रहा यह बिल्कुल ज़रूरी नहीं कि यह जुल्म और मजहबी तशद्दुद बराहे रास्त उसी के ज़रिए या उसी के मश्वरे से हुआ हो, इसी तरह यह भी ज़रूरी नहीं कि इसमें उसके इल्म व रज़ामन्दी को भी दख़्ल हो। रूमी सल्तनत उसके ज़माने में बहुत वसी हो चुकी थी और हुक्काम और अहलकाराने हुकूमत बड़ी तादाद में मुख़्तलिफ रियासतों और शहरों में मौजूद थे। चुनांचि इस बात का पूरा एहतिमाल है कि उनमें से कोई हाकिम और अपने इलाके का ज़िम्मेदार मजहबी बुन्याद पर जुल्म व तशद्दुद पर उतर आया हो और उसने अपने जाती जज़्बे और मज़हबी जोश से या हुकूमत की आम सियासी पॉलिसी पर अमल दरआमद की खातिर इस नये मजहब के खिलाफ सख़्त गीर तरीक़ा अपना लिया हो। यह बात कोई मफ़रूजा नहीं बल्कि हर हुकूमत और हर अहद में पेश आती रही है इस लिए अगर हम यह तस्लीम करलें कि उनकी रूपोशी का वाकिआ बादशाह हेडरेन के इसी दौरे में पेश आया और उनकी बेदारी और जुह्र का वाकिआ थ्योडेसिस के ज़माने में हुआ तो कुर्आन के बयान और ईसाईयों की बयान करदा मुद्दत में कोई खास फर्क बाकी नहीं रहता और वह बुन्याद ही ख़त्म हो जाती है जिसकी वजह से गबन के इस्तेहजा का मौक़ा मिला था। ❑❑

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

निकाह और शादी—

प्रौढ़ावस्था के बाद मुसलमान की ज़िन्दगी में महत्वपूर्ण प्रयाणस्थल (मरहले) आते हैं जो स्वाभाविक भी हैं और शरई भी, उनमें एक मरहला निकाह और शादी का है। इस्लामी शरीअ़त के दृष्टिकोण से प्रौढ़ावस्था के बाद (विशिष्ट परिस्थितियों को छोड़ कर) शादी में अधिक विलम्ब करना पसन्द नहीं किया गया, ताकि लड़के के लिए पथ भ्रष्ट होने और दुराचार की प्रवृत्ति में अभिवृध्दि न होने की सम्भावना कम से कम रह जाये। शरीअ़त ने इसके लिए कोई विशेष आयु निर्धारित नहीं की, यह लड़के के शारीरिक विकास, स्वास्थ्य, देश की जलवायु और उसकी परिश्थिति पर निर्भर है, परन्तु इस बात को अच्छा माना गया है कि जब वह शादी की आयु को पहुंच जाये तो उसमें जहाँ तक सम्भव हो देर न की जाये।

शादी के प्रति विचारधारा और रस्मों में भारतीय प्रभाव—

हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने अन्य इस्लामी देशों और विशेषकर अरब देशों की तुलना में कुल सम्बन्धी मापदण्ड को कहीं अधिक कठोर एवं संकुचित बना लिया है। यहाँ सामान्य रूप से एक खानदान अपने बराबर के खानदान ही में, और एक बिरादरी उसी बिरादरी में शादी करना आवश्यक समझती है, और इसमें वंशानुक्रमिक रूप से बराबरी तथा बिरादरी का अत्याधिक विचार किया जाता है। इस मामले में यहां अपेक्षाकृत कहीं अधिक कट्टरता का प्रदर्शन किया जाता है। सम्भवतः इस प्रकार की भावना हिन्दुस्तान की विशिष्ट परिस्थितियों तथा अनेक भारतीय जातियों की संस्कृति तथा परम्पराओं का प्रभाव कहा जा सकता है, जिनमें गोत्र एवं वर्ण व्यवस्था अतीत काल से कठोर और लोच रहित है। अन्य देशों के मुसलमान इस विषय में कहीं अधिक विस्तृत दृष्टिकोण और रीति रिवाजों के बन्धनों से मुक्त दिखाई पड़ते हैं। वहां आर्थिक अथवा सांस्कृतिक या शैक्षिक स्तर पर सामन्यजस्य तथा समानता को किसी हद तक आवश्यक समझा जाता है, परन्तु हिन्दुस्तान में विशेष रूप से जो लोग अपने को भद्र तथा उच्च कोटि का आदमी समझते हैं, अपने ही बराबर के खानदान अथवा अपने वंश एवं बिरादरी में रिश्ता करना ज़रूरी समझते हैं। इस बारे में वे अनेक तथ्यों की उपेक्षा कर देते हैं और उसमें प्रायः बड़ी जटिलताओं की उत्पति देखने में आई है। अब आर्थिक परिस्थितियों के दबाव, संसार की अर्थव्यवस्था तथा नैतिक दृष्टिकोण बदल जाने और आधुनिक शिक्षा

शेष पृष्ठ.............. 22 पर

पड़ोसियों के हुक़ूक़

हिन्दी: जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी रह0

हमसाया और पड़ोसी वह दो आदमी हैं जो एक दूसरे के क़रीब रहते और बसते हैं। इन्सानियत और उसके रहन–सहन की बुन्याद बाहमी इश्तिराक़ अमल, एक दूसरे की मदद और मवालात पर क़ायम है इस दुनिया में हर इन्सान दूसरे इन्सान की मदद का मुहताज है, अगर एक भूखा है तो दूसरे पर हक़ है कि अपने खाने में से उस को भी खिलाये, अगर एक बीमार है तो जो तन्दुरूस्त हो उसकी तीमारदारी करे, एक पर अगर कोई मुसीबत आये तो दूसरा उसका शरीक़ और हमदर्द बने, और इस अख़लाक़ी निज़ाम के साथ इन्सानों की कुल आबादी आपसी महब्बत और हुक़ूक़ की जिम्मेदारियों की गिरह (गाँठ) में बंध कर एक हो जाय, हर इन्सान देखने में जिसमानी और माद्दी एतबार से जितना एक दूसरे से अलग और बजाय खुद मुस्तक़िल है, अख़लाक़ी और रूहानी हैसियत से फर्ज़ है कि वह उतना ही ज़्यादा एक दूसरे से मिला हुआ, और एक का वजूद दूसरे के वजूद से उतना ही पैवस्ता हो इसीलिए हर मज़हब ने उन दोनों इन्सानों पर जो एक दूसरे के क़रीब आबाद हों आपस में महब्बत और इम्दाद की ज़िम्मेदारी रखी है कि वही वक़्त पर औरों से पहले एक दूसरे की मदद को पहुंच सकते हैं।

एक और अहम बात यह है कि इन्सान को उसी से तकलीफ और दुख पहुंचने का अंदेशा भी ज़्यादा होता है जो एक दूसरे से ज़्यादा क़रीब होते हैं, इसलिए उनके आपसी तअ़ल्लुकात खुशगवार और एक को दूसरे से मिलाये रखना एक सच्चे मज़हब का सब से बड़ा फर्ज़ है, ताकि बुराईयों का दरवाज़ा बंद होकर यह पड़ोस दोज़ख़ के बजाए जन्नत का नमूना हो, और एक दूसरे की महब्बत और मदद पर भरोसा करके घर से बाहर निकले और घर में क़दम रखे।

इस्लाम ने इन्हीं नियमों को सामने रख कर पड़ोसियों के हुक़ूक़ की दफ़आत बनाई हैं, अरबों में दूसरी क़ौमों से ज़्यादा इस्लाम से पहले भी पड़ोसी के हुक़ूक़ बहुत ही अहम थे, बल्कि वह इज़्ज़त और गर्व का मोजिब (कारण) थे। अगर किसी अरब के पड़ोसी पर कोई ज़ुल्म हो जाय तो वह दूसरे पड़ोसी के लिए बेगैरती और शर्म का मोजिब था और इसलिए उसकी खातिर लड़ने मरने को वह अपनी शराफत का निशान समझता था, इस्लाम ने आ कर अरबों के इस एहसास को कुछ संशोधनों और इस्लाहात के साथ और ज़्यादा मजबूत कर दिया।

वही–एं–मुहम्मदी सल्ल0 ने पड़ोसी के पहलू ब पहलू एक और क़िस्म के पड़ोसी को जगह दी है जिसको आम

तौर से पड़ोसी और हमसाया नहीं कहते, मगर वह हमसाया ही की तरह अकसर साथ होता है, जैसे एक सफर के दो दोस्त, एक मदरसे के दो तालिब–ए–इल्म, एक कारखाने के दो मुलाज़िम एक उस्ताद के दो शागिर्द, एक दुकान के दो शरीक़, कि यह भी हक़ीक़त में एक तरह की हमसायगी है, और उसका दूसरा नाम रफ़ाक़त और सुहबत (संगति) है। इन सब किसमों के पड़ोसियों में प्राथमिकता उसको हासिल है, जिसको पड़ोसी होने के अलावा क़राबत या हम मज़हबी (सहधर्मी) का या कोई और दोहरा तअल्लुक़ भी हो, कुर्आन पाक ने हय तशरीह (स्पष्टीकरण) पूरी तरह की है अनुवादः और (खुदा ने) हमसाया करीब और हमसाया अपरिचित और पहलू के साथी के साथ नेकी का हुक्म दिया है।

तालीम–ए–मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मंशा यह है कि पड़ोसियों और हमसायों में उनको तरजीह दी जायेगी जिनके साथ उस पड़ोस और हमसायगी के अलावा महब्बत और राबिता का काई दूसरा तअल्लुक़ भी मौजूद हो, वह चाहे रिशतेदारी और अज़ीज़दारी हो या हम मज़हबी हो या किसी क़िस्म की रफ़ाक़त हो, बहर हाल हक़ के साथ दोहरे तअ़ल्लुक़ात को एकहरे तअ़ल्लुक़ात पर तरजीह हासिल है। इस हुक्म–ए–इलाही की तफ़सीर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ तरीक़ों से फरमाई, सबसे बढ़ कर यह कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसको ईमान का बराह–ए–रास्त असर और नतीजा फरमाया।

एक दिन सहाबा रज़ि0 के मजमअ़ में आप तशरीफ रखते थे, कि एक खास दिलनशीन अन्दाज़ से फरमाया, ख़ुदा की क़सम मोमिन न होगा, जांनिसारों ने पूछा कौन या रसूलुल्लाह! फरमाया "वह जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से महफ़ूज़ नहीं (बुख़ारी)। एक और मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जो ख़ुदा और बदले के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिए कि अपने पड़ोसी की इज़्ज़त करे (बुख़ारी)।

एक और मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसको अल्लाह की क़ुर्बत का ज़रिया ज़ाहिर किया अप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया ख़ुदा के नज़दीक साथियों में बेहतर वह है जो अपने साथी के लिए बेहतर है, और पड़ोसियों में बेहतर वह है जो अपने पड़ोसी के लिए बेहतर है।

(तिर्मिज़ी)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ि0 की तालीम की ग़रज़ से उनसे फरमाया कि, हज़रत जिब्रील ने मुझे पड़ोसी के हुक़ूक़ की इतनी ताकीद की कि मैं समझा कि कहीं उनको वरासत का हक़ न दिला दें।

(बुख़ारी)

हक़ीक़त में इन अहादीस में इशारा इस बात की तरफ है कि पड़ोसियों का तअ़ल्लुक रिश्तेदारों के तअ़ल्लुक के क़रीब–क़रीबद पहुंच जाता

है। पड़ोसियों में महब्बत की तरक़्क़ी और तअ़ल्लुकात की उस्तुवारी का बेहतरीन ज़रीआ़ आपस में हदियों और तोहफों का तबादला है।

इन तोहफों के भेजने का ज़्यादा मौक़अ़ औरतों को पेश आता है इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुसूसियत के साथ औरतों को मुखातब करके फरमाया कि ऐ मुसलमानों की बीवियो! तुम में से कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन के लिए हक़ीर (घटिया) न समझे अगरचे बकरी का खुर ही क्यों न हो (बुख़ारी)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी तकमील तअ़लीम में न सिर्फ यह कि पड़ोसी को खुद अपने मिस्ल प्यार करने पर क़नाअ़त फरमाई, बल्कि जो न करे उसकी सबसे बड़ी दौलत यानी ईमान के छिन जाने का खतरा ज़ाहिर फरमाया। इन तअ़लीमात का यह असर था कि हर सहाबी अपने पड़ोसी का भाई और ख़िदमत गुज़ार बन गया था और हमसायों में दोस्त व दुशमन और मुस्लिम व गैर मुस्लिम की तमीज़ भी उठ गयी थी।

अल्लाह तआ़ला हम सब को इन तअ़लीमात पर अमल की तौफीक़ नसीब फरमाये।

❖❖❖

हिन्दुस्तानी मुसलमान..........

व्यवस्था के प्रभाव से इस विषय में कहीं अधिक लोच पैदा हो गई है। अब तो अधिकांश लड़के या लड़की की शिक्षा, खानदान की आर्थिक व्यवस्था और रूप रंग को देखा जाने लगा है। यह अनुभव कभी सफल और कभी असफल ज्ञात पड़ता है। लेकिन कुछ सीमित खानदानों तथा बिरादरियों के अतिरिक्त अब वंश परम्परा तथा सजातीय समस्या की उपेक्षा की जाने लगी है।

सगे सम्बन्धियों तथा बिरादरी में शादी—

मुसलमानों में अपने निकट सम्बन्धियों से तथा उन सम्बन्धियों के अतिरिक्त जिनसे विवाह करना स्थायी रूप से अवैध है, रिश्ता करना हिन्दू रीति रिवाज के प्रतिकूल कदापि बुरा नहीं समझा जाता, बल्कि इसका अधिक रिवाज है और बहुत से खानदानों में इसको प्रधानता दी जाती है। यथा—चचा—ज़ाद (चचेरे), मामू—ज़ाद, फूफी—ज़ाद, खाला ज़ाद भाई बहनों का रिश्ता। निःसन्देह पहले की अपेक्षाकृत इसकी प्रथा शिक्षा, आर्थिक दशा, स्वास्थ्य और वैद्यक एवं वंशानुक्रम हित के आधार पर कम होती जा रही है।

विवाह का सन्देश—

विवाह का सन्देश अथवा मंगनी की रसमों के बारे में सम्भवता हिन्दू तथा मुसलमानों में कोई अधिक अन्तर नहीं है। इसमें ख़ानदानी हैसियत, अर्थ व्यवस्था एवं रीति रिवाज़ का पालन करने और न करने का बहुत दखल है। आधुनिक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों ने इन सब बातों पर एक समान प्रभाव डाला है।

❖❖❖

लक्ष्मण रेखा

—शमीम एक़बाल खां 9506953183

एक महिला पत्राकार एक वीरान और सुनसान मिल में एक साथी के साथ शाम को साढ़े सात बजे फ़ोटोग्राफ़ लेने जाती है, वहां उसके साथ जो घटना घटित होती है वह बड़ी ही शर्मनाक है, इस शर्मनाक काम में शरीक सभी पांचों पापी पुलिस की पकड़ में आ जाते हैं, गैंग लीडर मोहम्मद क़ासिम हफ़ीज़ शेख उर्फ़ बंगाली ने मुम्बई क्राइमब्रांच को बताया कि वह पिछले साल चार औरतों के साथ इसी शक्ति मिल में मर्दान्गी दिखा चुका है।

यह घटना कोई नई नहीं है, इस तरह के बेशर्मी की घटनायें पूरे मुल्क में हो रही हैं, इन पर काबू पाने के लिए अलग—*अलग* विचार सामने आये हें, सख़्त क़ानून की ज़रूरत है, ऐसे लोगों को फांसी मिलनी चाहिए और जब फांसी पर विचार—विमर्श होने लगा तो मांग करने वालों को दुम दबाते देखा गया और कहने लगे कि जनता में जागरूकता लाने के लिए समाजी और मज़हबी संस्थाओं को भी आगे आना चाहिए।

एक ग़ज़ब के नेता जी ने कहा 'लड़कियां अगर दूर—दराज़ इलाकों में जाती हैं तो पुलिस को बता कर जाना चाहिए', इस भोलेपन की बात पर रफ़ीक़ शादानी का एक मिस्रा याद आ गया "दूध की हंडिया धरेव न भइया बिल्ली की निगरानी मा" ख़ैर ....

एक सुझाव बड़ा मुनासिब लगा कि सख़्त क़ानून बना कर बलात्कार की घटना पर नियन्त्रण नहीं किया जा सकता अन्य तरीके भी निकालने होंगे ख़ास कर लड़कियों के रहन सहन, और कपड़े किस तरह के होते हैं यह भी देखना पड़ेगा।

श्री राम के बनवास के दौरान सीता जी के लिए लक्ष्मण ने जो रेखा खींची थी उसकी आवश्यकता आज भी है और हमेशा रहेगी। सीता अभी तक लक्ष्मण रेखा के बाहर है, ज़रूरत है सीता को लक्ष्मण रेखा के अन्दर वापस आने की और जब सीता वापस आ जायगी, रावणों का ज़ोर ख़त्म हो जायगा लेकिन आज के ज़माने में लक्ष्मण रेखा को पिछड़ेपन का प्रतीक माना जाता है और यही विचारधारा शक्ति मिल तक बच्चियों को पहुंचा रही है।

कठोर से कठोर दंड की लोग मांग कर रहे हैं और इस मांग पर इतना सख़्त क़ानून बना दिया जाये कि केवल पीड़ित की गवाही पर मुल्ज़िम का सर काट दिया जाये, इससे कठोर दंड नहीं हो सकता परन्तु यह दंड घटना घटित होने के बाद ही दिया जायेगा, क़ानून तो ऐसा होना चाहिए कि लड़की पीड़ित होने के लिए शक्ति मिल तक जाये ही न।

अगर घटना घटित हो ही गई है तो सज़ा ऐसी होनी चाहिए कि जिससे लोग सबक हासिल करें। नारी के दिल व दिमाग़ में मतलबी

लोगों ने केवल अपने फ़ायदे के लिए यह भर दिया है कि 'तुम उनके कंधों से कंधा मिला कर चल सकती हो, तुम अबला नहीं हो, तुम सब कुछ कर सकती हो, तुम नौकरानियों की तरह मत रहो, तुम मर्दों की गुलामी मत करो, इस तरह की बातें सुन–सुन कर औरत को माँ, बाप, भाई बहन के लिए खाना बनाना, पति के बिस्तर की सिलवटें मिटाना, बच्चों के पोतड़े धोना ख़राब लगने लगा अब उसने 'एयर होस्ट्स' बन कर पराय मर्दों के लिए मुस्कराहटें बिखेरने का काम संभाल लिया है, अब उसे फ़ाइव स्टार होटलों में दूसरों के बिस्तर की शिकने बराबर करने में कोई झिझक नहीं होती, कला के नाम पर पोस्टरों पर टंगने के लिए कपड़े तंग और ख़त्म होते जा रहे हैं।

निजी कम्पनियों में युवतियों को वरीयता तो दी जाती है वह इसलिए कि कम दाम देकर अधिक लाभ कमाया जा सके, काम के घन्टे इनको अधिक दिये जाते हैं परन्तु काम के दाम बहुत कम, रात में नौ–दस बजे काम से छूटने वाली लड़कियों की सुरक्षा का मामला बहुत बड़ा मसला है।

लोगों ने महिलाओं को ओट और नोट के मकड़जाल में फांसा और "फ़ैमिली सिस्टम" को बरबाद किया, बच्चे ममता की छांव के बजाये 'क्रेज' में या नौकरानियों की देख–रेख में पलने लगे, नेता लोग कहते हैं आधी आबादी को (यानी महिलाओं को) ख़ाली बिठा कर नहीं खिला सकते, उन्हें काम तो करना ही पड़ेगा, तो सवाल यह उठता है कि क्या सारे पुरुष रोजगार से जुड़ गये हैं? पहले इनकी बेरोज़गारी दूर होनी चाहिए इसके बाद महिलाओं के रोज़गार की तरफ़ देखना चाहिए, इस समय हालात यह है कि किसी घर में पति–पत्नी दोनों के पास रोज़गार है और किसी घर में दोनों के पास रोज़गार नहीं है, ऐसी हालत में पहले घर की पत्नी की नौकरी दूसरे घर के पुरुष के पास होती है तो दोनों घरों में रोज़गार होता और दोनों परिवार खुशहाल होते।

पश्चिमी देशों की नकल में हमने भी महिलाओं को घर से बाहर निकाला और निश्चित रूप से पैदावार और आय में लाभ हुआ परन्तु फ़ैमली सिस्टम तबाह हो रहा है, महिला फ़ैमली सिस्टम को तोड़ कर बहुत आगे जा चुकी है, उसे उस जगह पर वापस आना है जो जगह मज़हब या धर्म ने दे रखा है।

मानवी जीवन दो भागों में बटा हुआ है, एक घर के अन्दर का विभाग और दूसरे घर के बाहर का विभाग, यह दोनों विभाग ऐसे हैं जो आपसी तालमेल के बग़ैर पारिवारिक खुशगवार ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी जा सकती, घर के अन्दर की व्यवस्था बहुत ज़रूरी है और घर के बाहर यानी रोटी–रोज़ी कमाने की व्यवस्था भी ज़रूरी है, इस तरह से जब दोनों व्यवस्थायें अपनी–अपनी जगह पर ठीक चलेंगी तभी ज़िन्दगी को सफल और उद्देशपूर्ण कहा जा सकता है वरना अगर इसमें से एक भी व्यवस्था बिखर कर ख़त्म हो गयी या कमज़ोर पड़ गई तो मानवी जीवन अस्तव्यस्त हो कर रह जायेगा।

शेष पृष्ठ............... 30 पर

खुलफ़ा-ए-राशिदीन व सहाब-ए-किराम रज़ि०

करो हम्द रब की वह मसजूद है
अकेला वही सब का माबूद है
मुहम्मद नबी जो हैं ख़ैरुल अनाम
अलैहिस्सलातो अलैहिस्सलाम
ख़िलाफ़त नबी की रही तीस साल
सनद इसकी है इक नबी का मक़ाल
अबू बक्रो, फ़रूक़, उस्मां, अली
ये थे हमदमो जानशीने नबी
हैं ख़ामिस ख़लीफ़ा हसन बिन अली
कि छः माह उनकी ख़िलाफ़त रही
बड़ा कारनामा ये उनसे हुआ
बड़े दो गिरोहों को यकजा किया
ये सुल्हे हसन मुआविया जो हुई
नबी की खबर के मुताबिक़ हुई
ये पाँचों ख़िलाफ़त के अरकान हैं
ये उम्मत के सरदार ज़ीशान हैं
सुनो गौर से ये भी क़ौले नबी
कि सुन्नत मेरी मेरे ख़ुलफ़ा की भी
नवाजिज़ से पकड़े मेरे उम्मती
न तन्क़ीद उन पर करें वह कभी
सहाबा नबी के हैं सब जन्नती
अहम बात ये भी है सुन लें सभी
रहे अपने रब से वह राज़ी सभी
रज़ा रब की भी उनको हासिल हुई
यह क़ुर्आन में साफ़ मौजूद है
बस उनका अदब रब को महमूद है
ख़ुदाया नबी पे तू रहमत उतार
सलाम उन पे या रब हज़ारों हज़ार
और असहाब व औलाद व अज़वाज पर
रहे सब पे रहमत की तेरी नज़र

अहले सुन्नत वल जमाअत

अहले सुन्नत वल जमाअत मसलकों में हैं बटे
गरचि हैं वह मुख़तलिफ़ पर हैं नहीं हक़ से हटे
हनफ़ी हैं और मालिकी, शाफ़ई व हंबली
पाँचवें अहले असर हैं, हैं यह पाँचों जन्नती
पूछ कर क़ौले नबी, उसपे करते जो अमल
हैं वही अहले असर मक़बूल हैं उनके अमल
मक़सूद आयत का है क्या, चाहती है क्या हदीस
थे सहाबा जानते अच्छी तरह क़ुर्आं हदीस
हैं उन्हीं की राह पर बेशक अइम्मा सबके सब
और मुक़ल्लिद उनके हैं सब ला जरम मक़बूले रब
यह हक़ीक़त है कि उनमें हैं बहुत से इख़्तिलाफ़
पर मफ़र इस से नहीं, है मसलहत इसमें जनाब
आड़ में मसलक की अब होएं न दिल आज़ारियां
अपने मसलक पर रहें बाहम न हों गुस्ताख़ियां
एक रब है, एक क़ुर्आं, एक है सब का रसूल
सब रहें मिल जुल के यां, रब करे सब को क़बूल
शिर्क जो तक़लीद को कहते बड़े नादान हैं
मतलबे तक़लीद से शायद कि वे अनजान हैं
फ़हमे दीं वाक़िफ़ से लेना बस यही तक़लीद है
फ़िक्हे दीं का मुजतहिद ही क़ाबिले तक़लीद है
शारेह़ हैं सारे अइम्मा शारेअ़ वह हरगिज़ नहीं
है यह मुम्किन शर्ह में कुछ चूक हो उनसे कहीं
मुजतहिद हर हाल में माज़ूर इंदल्लाह है
दो गुना या एक अज्र देता उसे अल्लाह है
हक़ दिखा, हक़ पर चला मुझ को मेरे अल्लाह तू
और बातिल से बचा मुझ को मेरे अल्लाह तू
हैं नबीये मुस्तफ़ा ख़ैरुल बशर ख़ैरुल अनाम
रहमतें लाखों हों उन पर और हों लाखों सलाम

नोट— शारहे: व्याख्या करने वाला।
शारेअ़: इस्लामिक विधान बनाने वाला

शिक्षा-दीक्षा का इस्लामी दृष्टिकोण

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

मानव–समाज में इन्सान को बुलन्द मकाम देने सम्मान व प्रतिष्ठा के शीर्ष तक पहुंचने में शिक्षा–दीक्षा की व्यवस्था का अग्रणी रोल रहा है, यह शैक्षिणिक व्यवस्था अपने विभिन्न रूपों और आकारों और सामाजिक व सांस्कृतिक तरीक़ों के साथ मानव इतिहास के विभिन्न युगों में हमेशा उपस्थित रही है, यही कारण है कि जो लोग ज्ञान के महत्व तथा उसके उच्च मक़ाम से भली–भांति अवगत हैं वे हर समय इस चिंता में रहते हैं कि उनके समाज एवं परिवार के सदस्य ज्ञान की मधुशाला से अवगत होकर उसके स्वाद से आनंदित हों और सांस्कृतिक सक्रियताओं और नैतिक व सामाजिक शिक्षाओं से पूर्ण रूप से लाभान्वित हों, ताकि उनके मौजूदा मानव समाज में और विश्व स्तर पर सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपने दायित्व के निर्वाहन में आसानी हो।

यह शैक्षिणिक व प्रशिक्षिक एहसास व समझ बूझ एक मानवीय गुण व प्रवृत्ति है, जो प्रत्येक मनुष्य में पाई जाती है और उसके ज्ञान–प्रेम, ज्ञानियों का भ्रण पोषण और इन बुलन्द कार्य को अंजाम देने वालों से प्रेम व स्नेह पर प्रेरित करता है जिन्होंने इस क्षेत्र में अपने मन मस्तिष्क की ऊँची उड़ानें और चिंतन व कल्पनाओं के चक्रमण दिखाए, ज्ञान व कला और संस्कृति व सभ्यता को जीवित करने तथा विकास में अपने संघर्ष और घोर प्रभाव का प्रयत्न की अंतिम बूंद निचोड़ कर ज्ञान–जगत में अंतिम छाप छोड़े और अपने अमूल जीवन को धन दौलत व ज़बान व कलाम हर प्रकार से इसी ज्ञान को समर्पित कर दिया और परस्थितियों व अवसरों से पूर्णरूपेण लाभान्वित होने की व्यक्तिगत, सामूहिक, नैतिक, सांस्कृतिक और जीवन की विभिन्न पक्षों में ज्ञान की लाभकारिता व प्रभावकारिता का विश्वास मन की गहराईयों में पैदा कर दिया।

शाख़–ए–गुल में जिस तरह बाद सहगाही का नम साधारण रूप से ज्ञान के प्रति यह धारणा पाई जाती है कि ज्ञान ही अच्छा मानव समाज और बेहतरीन इंसानी सोसाइटी का निर्माण कर सकता है, ज्ञान ही है जो दिलों को अच्छाईयों से सुसज्जित, बुराइयों से पाक और जीवन की उच्च नैतिक मूल्यों से सुसज्जित व शालीन बना कर मानवीय मूल्यों की रक्षा और उसके मूल्य व महत्व को बढ़ा सकता है।

इस्लामी जीवन का गगन चुम्बी महल भी पहले दिन से ज्ञान की परिपक्व आधारों पर स्थापित है, चरित्र व भूमिका और इस्लामिक चरित्र व चाल चलन का स्रोत भी ज्ञान है, यही ज्ञान एक ऐसा विशिष्ट जीवन–विधान अस्तित्व में लाता है जिसकी प्रताप हर ओर बिखरी हुई है और जिस की बरकतें हर दिशा में फैली हुई हैं, और जो मानव–विहार में अपने मीठे स्रोत के अमृत जल के द्वारा हरियाली ले आता है और उसका यह स्रोत

न कभी सूखने वाला है और न इसकी लाभ कारिता में कभी कमी आ सकती है।

इस्लाम ने ज्ञान के विभिन्न रूपों को मनुष्य की सोई हुई प्रतिमाओं को जागृत करने, उसे अधिकाधिक चकमाने और निर्माण व विकास के रास्ते पर केन्द्रित करने पर ज़ोर दिया है।

इस्लाम द्वारा स्थापित संस्कृति व सभ्यता दरअस्ल जीवन व समाज की सारी भौतिक व अभौतिक मांगों को अपनी परिधी में लिए हुए है और मनुष्य की मनोवृत्ति व मान्यताओं की आवश्यकताओं का उत्तरदायी और संरक्षक है, वह अपने असीम प्रदानों और अथाह वर्दानों के द्वारा जीवन को उद्देश्य संगत बनाता है, जिस जीवन का लक्ष्य मानव निर्माण और सांसारिक संपन्नता व कुशलता के लिए प्रयास करना है, और जीवन का सर्वप्रथम उद्देश्य यह है कि हर युग और हर क्षेत्र में ईमान, अमन व शांति और भाई–चारा व बंधुत्व तथा स्नेही भावनाओं को विकसित किया जाए और ऐसा वातावरण स्थापित किया जाए जिसमें मानवीय मूल्यों की सत्ता हो, महब्बत व प्यार के गीत गाये जाएं और मानव प्रेम तथा शांति प्रियता के सुर पूरे माहौल को आनंदमयी बना रहे हों।

किन्तु इसी के साथ यह भी याद रखना चाहिए कि इस्लाम जिस ज्ञान की प्रशंसा करता है, और जिस पर समाज और सभ्यता व संस्कृति की आधार शिला रखी जाती है, उसकी कुछ सीमाएं हैं, कुछ रेखाएं और नियम हैं और कुछ क़ानून और विधान हैं, साथ ही साथ वह एक प्रकाशमान, रौशन और गहरा दृष्टिकोण भी रखता है, जिसके स्रोत शुद्ध ईमान और दीनी अकीदे से फूटते हैं इस ज्ञान के धारक भी इसी शुद्ध और साफ स्रोत से प्यास बुझा कर ज्ञान के अमूल्य हीरे–मोती दुनिया के सामने बिखेरते हैं, और इसी की रौशनी में अपने उन नियम–कानून को तैयार करते हैं जो ज्ञान व कला और संस्कृति व सभ्यता के प्रचार–प्रसार में सहायक सिद्ध हो सकें, और उनके द्वारा शैक्षिणिक व प्रशिक्षित कार्यक्रम में जिन संसाधनों का होना अतिआवश्यक है उसका पता चल सके, और उनके यह नियम–कानून उम्मत की सब से बड़ी ज़िम्मेदारी "अच्छी बातों का हुक्म और बुरी बातों से मनाहीऔर ग़ैब पर ईमान" के निर्वाहन में लाभकारी हों और उसको आसानी पहुंचा सकें।

यही कारण है कि मुसलमान अपने विशेष शैक्षिक व्यवस्था के लेहाज़ से हमेशा विशिष्ट और आगे रहे हैं उन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालय और सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित किये, जिनकी परिस्थितियों के अनुकूल पूरी आज़ादी के साथ सारे सम्भावित उपलब्ध संसाधनों के द्वारा चलाते रहे हैं। उसके प्रबन्धन में किसी प्रकार की पाबंदी और उन पर किसी प्रकार का किसी दूसरी ओर से दबाव कदापि न था और न किसी वर्ग की ओर से ऐसे आरोप उन पर लगे थे जो उनकी शैक्षिक व्यवस्था के विरुद्ध और समरस्ता की आत्मा को हानि पहुंचाते हों क्योंकि यही वह आत्मा है जो हर शैक्षिणिक व्यवस्था की विशेषता है, जो

शेष पृष्ठ............... 34 पर

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः ईद की नमाज़ में इमाम सना के बाद ज़ाइद तीन तकबीरें कहना भूल गया क़िराअत के बाद उसे याद आया तो तीनों तकबीरें कहीं और फ़िर रुकूअ़ किया दूसरी रकअ़त में हस्ब मामूल क़िराअत के बाद तीनों तकबीरें कहीं थीं इस तरह नमाज़ पूरी की, नमाज़ हुई या नहीं?

उत्तरः नमाज़ हो गई! पहली रक़अ़त में सना के बाद तीन तकबीरें कहना वाजिब थीं भूल से रह गई जो क़िराअत के बाद कह ली गईं इस सूरत में चाहिए था कि सहु का सजदा किया जाये लेकिन ईद की नमाज़ में भीड़ के सबब सहु का सजदा मुआ़फ़ है इसलिए नमाज़ अदा हो गई।

प्रश्नः कुर्बानी का बकरा ज़ब्ह करते वक़्त तेज़ छुरी और ज़यादा ज़ोर लगाने के सबब पूरी गरदन कट कर अलग हो गई, ऐसी सूरत में कुर्बानी हुई या नहीं? और उस बकरे का गोश्त खाना हलाल रहा या गरदन अलग हो जाने के सबब हराम हो गया?

उत्तरः कुर्बानी हो गई, गोश्त हलाल रहा, ज़ब्ह का यह तरीक़ा ठीक नहीं है। चार रगों के कट जाने के बाद मजीद न काटना चाहिए लेकिन चूक से गरदन अलग हो गई तो न कुर्बानी में कोई फ़र्क़ आया न गोश्त हराम हुआ।

प्रश्नः मुहर्रम में कुछ लोग एक खास बाजा बजाते हैं जिसमें आम तौर पर बड़ा ढोल, झाँझ और ताशा होता है और कहते हैं यह ग़मी का बाजा है इसका बजाना जाइज़ है, इस बाजे का क्या हुक्म है?

उत्तरः इस्लाम में निकाह में एलान के लिए दफ़ (डफला) और जंग (युद्ध) में एलान के लिए नक्कारा (बड़ा नगाडा) बजाने की अनुमति है इनके अतिरिक्त किसी भी बाजे की अनुमति नहीं है, न ग़मी में कोई बाजा बजाया जा सकता है न खुशी में, बाजा बजाना और उससे आनन्द लेना गुनाह है।

प्रश्नः हमारे यहां कुछ लोग 9 मुहर्रम की शाम को एक खास लिबास कुरता पैजमा और पगड़ी पहनते हैं, हाथ में एक छड़ी लेते हैं और आ़शूरा की रात रात भर ताज़ियों की ज़ियारत के लिए दौड़ते रहते हैं और ज़बान से या हुसैन, या हसन, या अ़ली की आवाज़ निकालते रहते हैं, 10 मुहर्रम का ताजिया दफ़्न होने के बाद यह कपड़े उतारते हैं, इसको हज़रत हुसैन रज़ि0 का पायक बनना कहते हैं और इसको बड़ा सवाब समझते हैं, और कहते हैं इससे हाजतें और मुरादें पूरी होती हैं, इसका शरीअ़त में क्या हुक्म है?

उत्तरः इस्लामी शरीअ़त में यह सारे काम नाजाइज़ हैं और यह मानना कि इससे मुरादें पूरी होती हैं शिर्किया अक़ीदा

है इससे तोबा लाज़िम है।

प्रश्नः ताज़िया दारी का क्या हुक्म है?

उत्तरः ताज़िया दारी जो बर्रे सग़ीर में रायज है ना जायज़ व हराम है इस सिलसिले में बरेलवी मस्लक के उल्मा का भी यही फ़तवा है। आला हज़रत अहमद रज़ा खां उनके ख़लीफा हशमत अली खां और साहब ज़ादे मुस्तफ़ा रज़ा मुसन्निफ बहारे शरीअत अल्लामा अम्जद अली इन सबने ताज़ियादारी को नाजायज़ लिखा है।

प्रश्नः ताज़िया के सामने हलवा शीरीनी और शरबत रखना कैसा है?

उत्तरः नाजायज़ है और नज़र वग़ैरह मान कर रखना शिर्क है।

प्रश्नः एक मुसलमान बीमार रहता था उसने नज़र मानी कि मैं सेहत याब हो गया तो ताज़िया रखूंगा अल्लाह ने उसको सेहत दी मगर वह समझा कि उस नज़र के सबब सेहत मिली और अब बराबर हर साल आ़शूरा की रात ताज़िया रखता है उसका ये अमल कैसा है?

उत्तरः उसका यह अमल शिर्किया है तौबा लाज़िम है मगर उसे मुश्रिक न कहें बल्कि समझाने की कोशिश करें इसलिए कि वह अपने को मुसलमान कहता है।

प्रश्नः एक कल्मा गो एक मुकद्मे में माखूज़ था उसने नज़र मानी कि अगर मैं मुक़दमा जीत गया तो ताज़िया रखूंगा, वह मुक़दमा जीत गया और हर साल आशूरा की रात ताज़िया रखता है उसका यह अमल कैसा है?

उत्तरः उसका यह अमल शिर्किया है तौबा लाज़िम है।

प्रश्नः एक नमाज़ी मुसलमान के यहां बच्चा जिन्दा न रहता था उसने नज़र मानी की अगला बच्चा ज़िन्दा रहा तो ताज़िया रखूंगा अल्लाह की मस्लहत और करम कि अगला बच्चा ज़िन्दा रहा उसी साल से वह आशूरा की रात ताज़िया रखता है इस बारे में शरीअ़त का क्या हुक्म है?

उत्तरः यह अक़ीदा शिरकिया अक़ीदा है उसको ताज़िया दारी छोड़ कर तौबा करनी चाहिए और यह समझना चाहिए कि बच्चे को अल्लाह ने ज़िन्दगी दी, अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए मगर चूंकि वह नमाज़ पढ़ता है और अपनी ग़लत फहमी से यह अमल करता है लिहाज़ा उसे शिरकिया आमाल से निकालने की कोशिश करना चाहिए और उसे मुश्रिक न कहना चाहिए।

प्रश्नः एक कल्मा गो ताज़िया दारी करता है उसको समझाया गया कि ताज़िया दारी नाजायज़ है उसे छोड़ दो और तौबा कर लो उसने जवाब दिया कि मैं दस बरसों से बराबर ताज़िया रख रहा हूं मेरा कोई बच्चा ज़िन्दा न रहता था यह मेरा दस साला हुसैन ताज़िये कि मन्नत से जिन्दा है अगर तुम ज़िम्मेदारी लो कि ताज़िया दारी छोड़ने के बाद मेरा बच्चा सलामत रहेगा ज़िन्दा रहेगा तो मैं ताज़िया छोड़ दूं। जवाब दिया कि यह तो खुदाई दावा होगा और अगर तुम अ़क़ीदा रखोगे कि मैंने उसको ज़िन्दगी दी तो यह भी शिर्क होगा अलबत्ता मैं दुआ़ करता हूं

कि अल्लाह तआला तुम्हारे बच्चे को ज़िन्दा व सलामत रखेगा और वह अपनी तबई उमर को पहुंचेगा। मगर वह शख़्स ताज़ियादारी को छोड़ने को राज़ी न हुआ तो उसके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः वह शख़्स खुले हुए शिर्क में मुब्लता है जिस का सबब उसकी न समझी है लेकिन वह कल्मा गो है लिहाज़ा उसे मुश्रिक न कहें मगर उसे शिरकिया आमाल से निकालने की बराबर कोशिश करते रहें।

प्रश्नः कुछ मुसलमान ताज़िया दारी में मुब्तला हैं और कोई भी उन्हें समझाये तो उसे मारने और लड़ने पर आमादा हो जाते हैं ऐसे ताज़ियादारों के जनाज़े में शिर्कत का क्या हुक्म है?

उत्तरः चूंकि वह अपने आपको मुसलमान कहते हैं कल्मा भी पढ़ते हैं लिहाज़ा उनकी ताज़ियादारी को ग़लत फहमी पर महमूल करते हुए उनकी नमाज़ जनाज़ह पढ़ी जा सकती है लेकिन अगर न पढ़ें तो गुनहगार न होंगे।

❖❖❖

लक्षमण रेखा.............

घर एक ऐसा कारख़ाना होता है जिस की जनरल मैनेजर भी महिला होती है और मज़दूर भी वही महिला होती है जो साल में 365 दिन, महीने के 30 दिन, सप्ताह के सात दिन और दिन के चौबीस घण्टे काम करती रहती है, सोते समय भी वह ड्यूटी पर रहती है, कोई अवकाश नहीं उसका कोई बदल नहीं, यही महिला अपने घर की निरीक्षक है जो काम का निरीक्षण करती है, वही अपने घर की प्लानर जो अगले कार्यो को योजनाबद्ध करती है। यही अपने घर की वित्तीय नियंत्रक है जो आय और व्यय पर नियन्त्रण रखती है, वह अपने घर की जनसंपर्क अधिकारी है जो सम्बन्धियों में तालमेल बनाये रखती है। बहुत से महत्वपूर्ण मामलों में न्यायधीशों की तरह निर्णय लेती है, लिपिक की तरह बच्चों की फ़ीस, धोबी, दूध, सब्ज़ी आदि का हिसाब रखती है। वह एक अच्छी रसोइया भी है और अच्छी वेटर भी है जो सलीक़े से भोजन तैयार करने और परोसने की कला जानती है। बर्तन साफ़ करते वक़्त नौकरानी भी बन जाती है। आवश्यकता पड़ने पर नर्स भी बन जाती है। एक सुरक्षाधिकारी की तरह अपने पति की सम्पति की सुरक्षा भी करती है, एयर–होस्ट्स की तरह घर में प्रवेश करते हुए पति की मुसकुराहटों के साथ स्वागत करती है, यही औरत अपने बच्चों की प्रथम पाठशाला तो होती ही है साथ ही अपने बच्चों की अच्छी मित्र भी होती है जिस से बच्चे खुल कर बातें करते हैं। यही औरत अपने बच्चों को पाल–पोस कर एक अच्छा नागरिक बनाती है जिससे एक आरोग्य समाज की उत्पत्ति होती है।

इतनी ज़िम्मेदारी के कामों से हटा कर औरत को मुम्बई की सुनसान शक्ति मिल में साँयकाल कैमरा लेकर भेज दिया जहाँ वह अपना सब कुछ लुटा बैठी।

❖❖❖

दादी अम्माँ से एक वार्ता

—नाहेद फातिमा

मेरी दादी अम्माँ साठ को पार कर चुकी हैं, परन्तु उनका स्वास्थ्य माशाअल्लाह ठीक है, वह पिछले वर्ष हज भी कर आई हैं, रमज़ान के रोज़े रख लेती हैं; पाँचो वक्त की नमाज़ बड़ी पाबन्दी से पढ़ती हैं, तमाम बुराइयों और गुनाह के कामों से बचती हैं, बिदअत से बहुत दूर रहती हैं लेकिन लोगों ने बताया कि वह पहले ताजिया रखती थीं। जी चाहा कि इस बारे में उनसे कुछ गुफ़्तगू करूँ। आज सुब्ह वह नाश्ते के बाद कुछ अच्छे मूड में थी चुनांचि मैंने बात चीत शुरु कर दी।

मैं: दादी मैंने सुना है कि आप पहले ताजिया रखती थीं क्या यह सच है?

दादी: हाँ बेटी तुम ने सही सुना है मैं ताजियादार थी मगर अल्लाह ने मुझे उस गुनाह से बचा लिया अल्लाह का बड़ा करम हुआ।

मैं: दादी क्या आप मुझे यह बताएंगी कि आप ताजिया क्यों रखती थी फिर ताजिया दारी कैसे छोड़ी?

दादी: ज़रूर बताऊँगी ताकि तुम जान सको कि एक सुन्नी औरत या मर्द कैसे ताजियादार हो जाते हैं, और इसलिए बताऊँगी ताकि तुम मेरे बारे में किसी बदगुमानी में न रहो, सुनो : मेरी शादी हुई मेरा पहला बच्चा पैदाइश के दूसरे ही दिन जमोगा का शिकार हो गया तुम्हारे दादा ने बड़ी झाड़ फूंक करवाई, तावीज़ लाए मगर बच्चा बच न सका। एक वर्ष के बाद अल्लाह ने दूसरा बच्चा अ़ता किया बच्चा साल भर का हो गया था कि उस को ऐसी चेचक लगी कि पूरा बदन सड़ गया।

मैं: दादी अब तो चेचक का नाम व निशान भी नहीं है।

दादी: हाँ बेटी हमारे जमाने में चेचक एक वबा की तरह आती, महल्ले और गांव के अक्सर बच्चे अल्लाह को प्यारे हो जाते। तब चेचक का कोई इलाज भी न किया जाता था, बहर हाल कुछ दिनों बाद मेरा यह दूसरा बच्चा भी मुझ से छिन गया, अगले वर्ष अल्लाह ने तीसरा बच्चा भेज दिया यह बच्चा बड़ा खूबसूरत बड़ा सिहत मन्द था, साल भर का हुआ तो खड़ा हो कर चलने लगा, मगर अफ्सोस एक दिन उसको तेज़ बुखार आया तुम्हारे दादा अच्छे डाक्टर के पास ले गये, डाक्टर ने बताया कि इसको तो दिमाग़ी बुखार हो गया है। बहुत इलाज हुआ मगर मेरा बच्चा बच न सका। अब मैं बहुत दुखी रहने लगी और मेरे दिल में न जाने कैसे—कैसे ख़्यालात आने लगे।

मैं: दादी, किस तरह के ख़्यालात आते थे?

दादी: यही कि अल्लाह तआला का अजीब निज़ाम है किसी को औलाद देते हैं, किसी को औलाद दे कर ले लेते हैं।

मैं: दादी, जो औलाद आप

की आगे आगे गई वह आखिरत में आपके बड़े काम आएगी वह आपकी बख़शिश का सबब बनेगी।

दादीः अल्लाह करे ऐसा ही हो। बेटी मैं एक दिन दुखी बैठी सोच रही थी कि देखो अगले बच्चे का क्या होगा कि महल्ले की बकरीदन खाला आ पहुंची वह अकसर मेरे पास आकर बैठतीं और तरह–तरह की बातें करतीं। वह कहने लगी बेटी मेरी एक बात मान लो, मैंने पूछा कौन सी बात? कहने लगी बेटी तीन बच्चे खो चुकी हो चौथे की उम्मीद है, तुम इमाम साहिब का ताज़िया मान लो कि अगर अगला बच्चा ज़िन्दा रहा तो मैं ताज़िया रखूंगी। मैं गरज़ मन्द थी, मैंने नज़्र मान ली कि अगला बच्चा जीवित रहा तो मैं ताज़िया रखूंगी, अगला बच्चा पैदा हुआ, उसके बाद जब मुहर्रम आया तो बकरीदन खाला ने ताज़िया की मन्नत याद दिलाई, मैंने तुम्हारे दादा से ज़िक्र किया वह एक अच्छा ताज़िया खरीद लाए, नौ मुहर्रम की शाम को एक तख़्त पर दरवाज़े के सामने रखा गया उसके गिर्द रौशनी का इन्तिज़ाम किया गया उसके सामने शीरीनी, हलवा वग़ैरह रखा गया, महल्ले की औरतें जमा हुईं, दहे रोये गये और रतजगा किया गया, उस साल से हर साल ताज़िया रखा जाता रहा, और महल्ले के लोग चढ़ावे चढ़ा कर और रात जाग कर मेरी मदद करते रहे दस मुहर्रम को ताज़िया दफन करने में भी साथ देते रहे।

तुम्हारे दादा ने इस बार बच्चे को बराबर डॉक्टर की देख रेख में रखा, यह वही बच्चा है जिसे तुम अब्बू कहती हो।

बच्चा कुछ बढ़ा तो घर ही में उसकी पढ़ाई का बन्दोबस्त किया गया जब इस लायक़ हुआ कि वह बाहर रह सके तो तुम्हारे दादा ने उसे नदवा भेज दिया। बच्चा बराबर नदवे में पढ़ता रहा और यहां हर मुहर्रम को ताजियेदारी होती रही।

मैंः दादी, जब अब्बू घर आते तो आप लोगों को ताजियादारी के बारे में कुछ न कहते?

दादीः हम यह देखते थे कि वह ताजिये से कुछ अलग थलग रहते थे मगर वह कुछ कहते न थे, लेकिन जब वह कई वर्षों के बाद फारिग़ होकर आए तो एक दिन मुझे और तुम्हारे दादा को बिठा कर इस तरह बात करने लगे जैसे उनको बड़ा गम हो, खास तौर से मुझे मुतवज्जेह (सम्बोधित) किया अम्माँ यह ताज़ियादारी जो हमारे घर में हो रहीहै यह ना जाइज़ व हराम है, यह सही है कि हज़रत हुसैन रज़ि0 सहाबीये रसूल हैं, हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे हैं, जन्नती नौजवानों के सरदार हैं हमारे पेशवा हमारे सरदार हैं, उनसे महब्बत ईमान का जुज़्व है लेकिन इस ताजिये का उनसे क्या तअल्लुक़? उनके बेटे हज़रत जैनुल आबिदीन जिन्होंने करबला की लड़ाई अपनी आँखों से देखी, खानदान के स़त्तरह लोगों की शहादत उनके सामने हुई, वालिदे मुहतरम हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत अपनी आँखों से

देखी और एक अर्से तक ज़िन्दा रहे लेकिन कभी उन्होंने अपने वालिद की याद में ताजिया न रखा, इसलिए कि इस्लामी तालीम में ताजियादारी का कहीं ज़िक्र नहीं है, आप लोगों ने मुझे दीन पढ़ाया पूरी दीनी तालीम में इस तरह की ताजियादारी का कहीं ज़िक्र तक नहीं है और यह ख़्याल कि ताज़िया रखने से मैं ज़िन्दा रहा यह तो शिर्किया अकीदा है, अल्लाह ने ज़िन्दगी दी तो मैं ज़िन्दा रहा फिर तुम्हारे अब्बू ने बिदअत की बुराई में कई हदीसें सुना कर कहा आप लोगों से मेरी दरख़्वास्त है कि ताज़िया दारी छोड़ दें और इस से तौबा करें।

मैं: दादी फिर क्या हुआ?

दादी: बेटी मैंने तुम्हारे दादा से कहा कि बेटे की बातें समझ में आ रही हैं तुम्हारी क्या राय है? वह बोले यह पाप तुम्हीं तो लाई थीं, मैं अपने तब्लीगी भाइयों से भी सुन चुका हूं, वह बता रहे थे कि यह ताजियादारी सिर्फ पाकिस्तान, हिन्दुस्तान और बंगला देश ही में है, अरब देशों में और दूसरे मुसलिम देशों में तो इसे कोई जानता भी नहीं है और उन्होंने बताया कि ताजियादारी और उससे मुतअल्लिक़ दूसरे काम जैसे अलम उठाना, पायक बनना नौहा पढ़ना, मातम करना वग़ैरा को तमाम उलमा यहां तक कि बरेलवी मसलक के उलमा ने भी इन तमाम कामों को नाजाइज़ और हराम कहा है। लिहाजा आइन्दा से हमारे यहां ताजिया न रखा जाएगा।

तुम्हारे अब्बू बहुत खुश हुए और हम लोगों ने तमाम गुनाहों से तौबा की और ताज़िया दारी छोड़ देने का पक्का अहद कर लिया।

अगला मुहर्रम आया तो हमारे यहां ताजिया नहीं रखा गया, बेटी लोगों ने न जाने क्या क्या कहा और कहा कि इस घर की तबाही रखी है, हम लोगों ने कहा जब ताजियादारी दीन में नहीं है। और जब हमको मालूम हो गया कि दीन में नई बात निकालना बहुत बुरा होता है, और दीन में जो नई बात निकाली जाए जिसे अल्लाह तआला के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया न हो वह मरदूद है नीज़ दीन में नई बात निकालना गुमराही है तो हम ताजिया क्यों रखें, हम अल्लाह से महब्बत रखते हैं अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके घर वालों और उनके सहाबा से महब्बत रखते हैं, और अल्लाह पर भरोसा रखते हैं, उसके फैसले पर राज़ी हैं मगर अल्लाह को नाराज़ करने वाले काम ताज़िया दारी से हज़ार बार तौबा करते हैं। बेटी अल्लाह की मरज़ी उसी साल एक बीमारी में तुम्हारे दादा का इन्तिक़ाल हो गया हम लोगों पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा हम लोग इननालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढते रहे।

लोगों ने कहा देखा? ताज़िया दारी छोड़ने का वबाल ताजिया छोड़ा बाप खोया।

तुम्हारे अब्बू न जवाब दिया कि हर एक की मौत का वक्त मुकर्रर है उसे कोई टाल नहीं सकता, जब हमारे सरदार हज़रत हुसैन रज़ि0

की शहादत का वक्त न टल सका तो मेरे वालिद की वफात का वक्त कौन टाल सकता था?

मैंः दादी आप लोग बड़ी आज़माइश से गुज़रे हैं।

दादीः हां बेटी मगर अल्लाह ने अपने करम से हक पर जमाए रखा। अगले साल तुम्हारे अब्बू की शादी तै हुई तुम्हारे दादा और तुम्हारे नाना दोनों दावती कामों के साथी थे, एक जुमे को अस्र की नमाज़ के बाद तुम्हारे अब्बू का निकाह हुआ, निकाह की मजलिस में शरीक होने वालों को चाय नाश्ता पेश किया गया और तुम्हारी माँ रुख़्सत हो कर मेरे घर आगई। दूसरे दिन वलीमे की मुनासिब दावत हुई न तेल न मैन, न बारात न चौथी, इस पर भी लोगों ने उंगलियां उठाईं। साल बाद तुम्हारी पैदाइश हुई फिर लोगों की जुबानें खुलीं, किसी ने कहा देखा? अब यह घर औलादे नरीना से महरूम कर दिया जाएगा ताज़ियादारी छोड़ने का वबाल आके रहेगा। हम लोगों ने जवाब दिया बच्ची भी अल्लाह का इनआम है हम लोगों को बच्ची की पैदाइश पर बड़ी खुशी है। दो साल बाद तुमरे भाई की पैदाइश हुई, माशा अल्लाह दोनों पले बढ़े दोनों की अच्छी तालीम हुई मैं दुआ करती रही हूँ कि अल्लाह तआला तुम दोनों के फर्ज़ (अर्थात तुम दोनों के सिलसिले में शादी विवाह की जो जिम्मेदारी हम लोगों पर है) की अदायगी में आसानियां पैदा फरमाए।

तुम्हारे वालिद की कोशिश से अलहम्दुलिल्लाह तुम भाई बहनों की शादियां हो चुकी हैं सब खुश हो, आराम से हो, अब दुआ है कि तुम सब आराम और सुकून की जिन्दगी गुजारो अल्लाह तआला तुम सब को अपने दीन पर काइम रखे, और मैं जब तक ज़िनदा रहूं इस्लाम पर रहूं जब मौत आए तो ईमान पर आए। आमीन!

मैंने भी आमीन कही और दादी का शुक्रिया अदा किया और इस वार्तालाप को लिख लिया शायद इससे किसी को लाभ पहुंचे।

❖❖❖

शिक्षा-दीक्षा का ....

उसके शरीर में हर समय चक्रमण करती रहती है।

इस्माली शिक्षाएं, मानवीय ज्ञान व कला और सांसारिक व ब्रह्मांडके रहस्योद्घाटन और आधुनिकतम खोजों और आविष्कारों के विषय में किसी प्रकार की परिसीमन की बिल्कुल पक्षधर नहीं हैं, बल्कि यह शिक्षाएं ज्ञान के असीम सागर में डुबकी *लगाने और बहुमूल्य से बहुमूल्य* हीरे– मोतियों को निकाल कर दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का आमंत्रण देती हैं और इस रास्ते की कठिनाईयों से लड़ने में अपने अनुयायियों की पूरी सहयता करती हैं। इसका कारण यह है कि इस्लामी जीवन के विकास और बुलंदी के लिए मानवीय और धार्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान की समान आवश्यकता है, इस्लामी जीवन अपनी लाभकारिता उसी समय सिद्ध कर सकती है जब वह इन विद्याओं के मध्य सही संतुलन बनाये रखे और ब्रह्माण्डीय व सांसारिक ईश्वरीय साक्ष्यों और रहस्यों का खुलासा करने के लिए सदैव प्रयास रत वह प्रयत्नशील रहे। ❑❑

बीमार के हुकूक

हिन्दी: जमाल अहमद नदीव सुलतानपुरी —अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0

दुनिया का एक और कमजोर वर्ग जो हमारी हमदर्दियों का मुस्तहिक़ है बीमारों और मरीज़ों का है, यह उमूमन अपनी इस हालत में अपनी खबरगीरी और खिदमत खुद नहीं कर सकते, इन हमदर्दी के लायक़ इंसानों की देख भाल, खिदमत गमख़्वारी (सहानुभूति) और तीमारदारी भी इंसानियत का एक फर्ज़ है, और उस फर्ज का नाम अरबी में "इयादत" है।

इन बीमारियों के साथ इस्लाम ने सबसे पहले हमदर्दी तो यह दिखाई है कि वह बहुत से फ्राइज़ जिनके अदा करने से वह मजबूर हो रहे हैं या जिनके अदा करने से उनकी तकलीफ की ज़्यादती का ख़्याल है उनको एक दम मुआफ़ कर दिया है और कुर्आन ने उसके लिए एक कुल्ली (समग्र) उसूल बना दिया है अनुवादः और न बीमार पर कोई तंगी है (सूर–ए–नूरः 8) न अंधे पर तंगी है (कि वह जिहाद में शरीक हो) और न लंगड़े पर और न बीमार पर (सूर–ए–फतहः 2) न कमज़ोरों पर और न बीमारों पर जिहाद में न शरीक होने पर पकड़ है। (सूर–ए–तौबा–12) बीमारों के लिए वजू माफ है (या तुम बीमार हो तो तयम्मुम करो) सूर–ए–माइदः 2) इसी तरह उनसे तहज्जुद की लंबी नमाज़ें माफ हैं। खुदा को मालूम था कि तुम में कुछ बीमार भी होंगे (सूर–ए–मुजम्मिल–2)

इसी तरह हज के अहकाम में भी बीमार के लिए रियायत फरमाई गयी है तो तुम में जो बीमार हो (सूर–ए–बकरः 24) रोज़ा तोड़ने की उनको इजाज़त दी गई, खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने की ताक़त न हो तो बैठ कर, और बैठने की भी ताक़त न हो तो लेट कर नमाज़ की रुख़्सत दी गई, उससे अंदाज़ा हो सकता है कि जब खुदा ने उनसे अपने फ्राइज़ माफ कर दिये तो बंदों को फिर हद तक उनसे अपने अख़्लाक़ी मुतालबे में कमी कर देनी चाहिए।

इस्लाम ने मुसलमान की बीमारी की तकलीफ को सब्र व शुक्र के साथ बर्दाश्त करने की हालत में ग़म के बजाये खुशख़बरी बना दिया है।

इस्लाम का नजरिया यह है कि मोमिन को दुनिया में जो तकलीफ भी पहुंचती है वह उसके गुनाहों का कफ्फारा बन जाती है, अगर वह बीमार हो जाय और सब्र के साथ बीमारी की तकलीफों को बर्दाश्त करे तो आखिरत के सख़्त अज़ाब से बचाने के लिए वह उसके गुनाहों का बदला बन जाती है, और वह पाक साफ हो जाता है। (मुस्लिम व अबू दाऊद)।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बीमारों की इयादत की खास ताकीद फ़रमाई है, उसके आदाब तालीम किये हैं उसकी दुआयें सिखाई हैं और उसका सवाब बताया है, आप सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जो कोई मुसलमान के किसी ग़म को हल्का करेगा, खुदा उसके ग़म को हल्का करेगा। (अबू दाऊद)। और यह भी फरमाया कि, एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर पांच हक़ हैं, जिनसे एक यह है कि जब वह बीमार पड़े तो उसकी इयादत करे (बुखारी)।

इरशाद हुआ कि जब कोई सुबह को किसी बीमार की इयादत करता है तो शाम तक फरिश्ते उसकी मग़फिरत की दुआ मांगते हैं और जब वह शाम को इयादत करता है तो सुबह तक फरिश्ते उसकी मग़फिरत के लिए बारगाहे इलाही में दुआ करते हैं। (अबू दाऊद)

यह भी आया है कि जब कोई बीमार की इयादत को जाता है तो वापसी तक वह जन्नत के मेवे चुन्ता रहता है। (मुस्लिम) फरमाया कि, जब कोई किसी की इयादत के लिए जाये तो उसके हाथ और पेशानी पर हाथ रखे और उसको तसल्ली और दिलासा दे और उसके शिफा पाने के लिए खुदा से दुआ करे। (अबू दाऊद)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप की तालीम से सहाब–ए–किराम रज़ि0 को बीमारों की इयादत का इस कदर ऐहतिमाम था कि वह इसको एक इस्लामी हक़ जानते थे, बल्कि इस मामले में मुसलमान और गैर मुसलमान की भी तफ्रीक़ (अलगाव) न थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों की इयादत फरमाई है (बुखारी)। मुनाफिक़ों की इयादत को तशरीफ ले गये हैं (बुखारी) और इसीसे उलमा ने गैर मुस्लिमों की इयादत की भी इजाज़त दी है (मजमअल–बिहार)। हज़रत सअ़द बिन मुआज़ रज़ि0 जब ज़ख़्मी हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका खेमा मस्जिद में नस्ब फरमाया ताकि बार–बार उनकी इयादत की जा सके (अबू दाऊद)।

हज़रत रफीदा रज़ि0 एक सहाबिया थीं जो सवाब की खातिर जख़्मियों का इलाज़ और उनकी खिदमत किया करती थीं, उनका खेमा भी उसी मस्जिद में रहता था ताकि लड़ाइयों के मुसलमान जख़्मियों की तीमारदारी और मरहम पट्टी करें। (सीरते इब्ने हिशाम, अदबुल मुफरद) ग़ज़वात और लड़ाइयों में भी बाज़ ऐसी बीवियों फौज़ के साथ रहती थीं जो बीमारों की खिदमत और ज़ख्मियों की मरहम पट्टी करती थीं (मुस्लिम)। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पैरुओं को उमूमियत के साथ हुक्म दिया है कि भूके को खिलाओ, कैदी को छुड़ाओ, और बीमार की इयादत करो (मुस्नद अहमद)। एक दफा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इयादत की फज़ीलत नीचे दिये गये मुवस्सिर व दिलकश तर्ज अदा में जाहिर फरमाई कि कयामत में अल्लाह तआला दरयाफ्त फरमायेगा कि, ऐ आदम के बेटे! मैं बीमार पड़ा तूने मेरी इयादत न की, वह कहे गा, ऐ मेरे खुदाः तू सारी दुनिया का परवरदिगार था, मैं तेरी इयादत क्यों करता अल्लाह तआला फरमायेगा,

शेष पृष्ठ................ 39 पर

दीने इस्लाम हक है

है हुकूमत और रियासत क्यों सुकूं मफ़कूद है
मिल चुकी है जब विज़ारत नींद क्यों मादूम है
हातिफ़े ग़ैबी यह बोला बात यह ग़ैबी सुनो
चाहते हो गर सुकूं तो बात यह दिल पे लिखो
जब तलक प्यारे नबी की राह न अपनाओगे
हुब्बे रब हुब्बे नबी को दिल में न बैठाओगे
अपने रब का ख़ौफ़ अपने दिल में न तुम लाओगे
और हयाते उखरवी पर तुम यकीं न लाओगे
दौलतो मनसब से हरगिज़ तुम सुकून पाओगे
हाय दौलत की हवस का गम हेशा खाओगे
निकलो ऐ बन्दो खुदा के ख़ौफ़े रब बरपा करो
जाहो मनसब कीजगह तुम हुब्बे रब पैदा करो
फ़लसफ़ों और मनतिकों से काम कुछ होगा नहीं
उतरो मैदाने अमल में वरना कुछ होगा नहीं
एक चिश्ती ने अकेले लाखों दिल परचा लिये
लाखों दिल दुशमन के अपने ख़ुल्क़ से अपना लिये
खुल्क़ की ताक़त से तुम भी पैदा करदो इन्क़िलाब
जो सई करता है रब करता है उसको कामियाब
दीने हक़ इस्लाम है हर एक को बतलाओ तुम
हक़ पे साबित खुद रहो और हक़्क़ को फैलाओ तुम
हक़्क़ को अपनाने पर रब की रज़ा तुम पाओगे
आग से बच जाओ गे जन्नत में जा तुम पाओगे
या इलाही हक़ दिखा कर हक़्क़ पर हमको चला
और बातिल को दिखा कर राहे बातिल से बचा
मेरे रब की रहमतें प्यारे नबी पर हों मुदाम
रहमते लाखों हों उन पर और हों लाखों सलाम

मुलाक़ात एक डॉक्टर साहब से

—इदारा

एक डॉक्टर साहब से एक दस मिनट की मुलाक़ात का मौक़ा मिला, मुझ से बे तकल्लुफ थे, फौरन शिकायत के अन्दाज़ में कहने लगे कि मुझ से मुतालबा हो रहा है कि मैं मगरिब के बाद मस्जिद में तकरीर सुनूं, मुझे मालूम है वहां मुझ से मुतालबा होगा कि मैं तीन दिन या कम से कम 24 घण्टों के लिए मतब छोड़ कर निकलूं यह क्या बात है, क्या मैं इलाज के जरिये जो मख़लूक़े ख़ुदा की खिदमत करता हूं क्या यह फुज़ूल काम है। क्या अल्लाह तआला के यहां इसका अज्र नहीं है? इस तरह वह तीन मिनट तक मुसलसल बोलते रहे जब वह ज़रा रुके तो मैंने अर्ज़ किया : जिन लोगों ने आपसे वक्त मांगा वह बड़े मुख़्लिस हैं। और आपके ख़ैर ख़्वाह (भला चाहने वाले) हैं, उन पर दीन आम करने की एक धुन है, जो मिलता है और जिस से मिलते हैं अपनी बात रखते हैं किसी पर जब्र नहीं करते मुखातब को अच्छा लगे या नागवार हो मगर फैसला उसी का रहता है। बेशक आप इलाज के ज़रिए अपनी रोज़ी भी कमाते हैं और मख़लूके खुदा की खिदमत भी करते हैं, बेशक आप मगरिब बाद मस्जिद में वक्त देंगे या चौबीस घण्टे या तीन दिन या कुछ दिनों के लिए मतब छोड़ कर निकल जाएंगे तो आपकी आमदनी तो मुतअस्सिर होगी ही पता नहीं कितने मरीज़ों को नुक्सान पहुंचेगा, लेकिन. ज़रा गौर कीजिए बेशक मियां बीवी के तअल्लुक़ात के लिए आप अपने खान्दान में निकाह का एहतिमाम करते हैं और धूम धाम से वलीमा भी करते हैं, बेशक किसी के इन्तिक़ाल पर मय्यित को इस्लामी तरीके पर नहलाते, कफनाते, नमाज़े जनाज़ा पढने और दफनाने का एहतिमाम करते हैं, आप ईदैन की नमाज़ें ईद गाह में अदा करते हैं, जुमे की नमाज़ भी मस्जिद में पढ़ते हैं, मगर मुझे मालूम है कि पंचवक्ता नमाज़ों में क्या हो रहा है और रमजान के रोज़ों के साथ क्या हो रहा है। बेशक आप मख़लूक़ की आला ख़िदमत कर रहे हैं, उसकी उजरत भी पा रहे हैं लकिन क्या इससे अल्लाह के हुकूक मुआफ हो जाएंगे? हरगिज़ नहीं। डॉक्टर साहब हम मुसलमान बन्दों के हुकूक भी अदा करते हैं और अल्लाह के हुकूक भी अदा करते हैं, पांच वक्त की नमाज़ जमाअत से मस्जिद में पढ़ना चाहिए कोई मजबूरी हो तो मतब ही में जमाअत का नज़्म करें, इसमें भी मज़बूरी नजर आए तो नमाज़ के औक़ात अपने पास लिख रखें और वक्त आते ही मुसल्ले पर खड़े हो जाएं, रमजान के रोजे न छोड़ें वरना याद रखें नमाज़ छोड़ने और रोज़े छोड़ने की सज़ा से बच न सकेंगे। अल्लाह का शुक्र है। डॉक्टर साहब को कोई नागवारी नहीं हुई। ढण्डे दिल से बातें सुनीं और खामोश रहे जैसे कुछ सोच रहे हों, मैंने रुख़्सत चाही और सलाम करके चल दिया।

डॉक्टर साहब लखनऊ ही के मशहूर डॉक्टर थे अब मरहूम हो गये, अल्लाह तआला मग़फिरत फरमाए, नाम लिखना मुनासिब नहीं समझा।

यह तो ऐसे डॉक्टर साहब थे जिनमें अल्लाह तआला ने यह सलाहियत रखी थी कि वह इस तरह की बातें सुन लेते थे मगर हमारे कितने ऐसे डॉक्टर इन्जीनियर, प्रोफेसर और सरकारी उहदों पर हैं जिनको नमाज़ रोजे से कोई वास्ता नहीं और उन तक दीन की बात करने वालों की पहुंच तक नहीं है न वह कभी किसी आलिम की तकरीर में शरीक होते हैं न ही दीनी किताबें उनके मुतअ़ले में आ सकती हैं समझ में नहीं आता कि ऐसे लोगों तक दीन कैसे पहुंचाया जाय। अल्लाह तआ़ला हमारी और उनकी हिदायत की राह आसान फरमाएं।

इसीलिए दीन का काम करने वाले इन्तिहाई कोशिश करते हैं कि हर मुस्लिम बच्चे के लिए जरूरीयाते दीन की तालीम का नज़्म हो इसलिए कि बड़ा हो कर शायद वह ऐसा मशगूल हो कि फिर दीन समझने का मौक़ा उसको न मिल सके ।

एक बड़ी मुश्किल यह है कि हमारे मकातिब में कुछ ज्यादा तालीम याफ्ता पढ़ाने वाले नहीं होते और अक्सर गरीब या आम मुसलमानों के बच्चे होते हैं जिनके घरों का रहन सहन का मियार ऊँचा नहीं होता उसका असर मदरसे के माहौल पर भी पड़ता है, बच्चे साफ सुथरे नहीं होते, बच्चों के बैठने का मेयार बहुत नीचा होता है इसलिए कुछ ऊँचे मेयार के लोग हमारे दीनी मकतबों में अपने बच्चे नहीं भेजते, इसका हल यह है कि मकातिब चलाने वाले इस तरफ ध्यान दें, अगर वह तवज्जोह दें तो गरीब बच्चे भी ऐसे साफ सुथरे और मुनज्जम दिख सकते हैं और ऊँचे मेयार के स्कूलों के नज़्म से आगे जा सकते हैं और फिर ऊँचे मेयार की जिन्दगी गुजारने वालों को अपने बच्चों को मकतब में भेजने में कोई आर न होगी। मैंने ऐसे मकातिब देखे हैं जहां डॉक्टरों और इन्जीनियरों के बच्चे तालीम हासिल कर रहे हैं।

❖❖❖

बीमार के हुक़ूक़ ....

क्या तुझे खबर न हुई कि मेरा बन्दा बीमार हुआ मगर तू ने उसकी इयादत न की, अगर करता तो मुझे उसके पास पाता। (मुस्लिम)

तालीम की यह तर्ज़ और बीमार पुर्सी, बीमारों की तीमारदारी और ग़मख़्वारी की कैसी दिल नशी तलक़ीन है, और साबिर व शाकिर बीमार की ऐसी हिम्मत अफज़ाई है कि उसका रब गोया उसके सरहाने खड़ा, अपनी मेहरबानियों से उसे नवाजता रहता है, और उसके दर्जे और रुतबों को बुलन्द करता रहता है, और कैसे खुश किस्मत वह लोग हैं जो उन बीमारों की खिदमत करके खुदा का कुर्ब (समीपता) पाते हैं।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

–डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

नहीं चाहता मोदी बनें पीएमः सेन

नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन ने कहा कि एक भारतीय होने के नाते मैं हरगिज नहीं चाहता कि गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बनें, क्योंकि उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जिससे अल्पसंख्यक खुद को सुरक्षित महसूस करें। प्रख्यात अर्थशास्त्री सेन ने एक निजी चैनल से खास बातचीत में यह बात कही। सेने ने कहा कि हम भारतीय ऐसी स्थिति बिल्कुल नहीं चाहते, जहां अल्पसंख्यक असुरक्षित महसूस करते हों और मानते हों कि 2002 में उनके खिलाफ सुनियोजित तरीके से हिंसा की गई थी। ऐसा रिकॉर्ड रखने वाले व्यक्ति को देश का प्रधानमंत्री बनना चाहिए।

भलाई करने से मिलती है लंबी उम्र-

भलाई का ज़माना बेशक न हो, लेकिन एक नए शोध से साबित हुआ है कि भलाई करने वाले लंबी उम्र पाते हैं। इससे उनकी मानसिक सेहत पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि जो लोग अपने समुदाय की नियमित रूप से मदद करते हैं, उनको असामयिक मौत का खतरा ऐसा नहीं करने वालों के मुकाबले 20 फीसदी कम होता है। जबकि जो लोग दूसरे की मदद करने को लेकर कंजूस होते हैं उनको असामयिक मौत का खतरा ज्यादा होता है। यह शोध 40 अंतराष्ट्रीय अध्ययनों पर आधारित है। इसके मुताबिक दूसरों की मदद करने से व्यक्ति का अवसाद कम होता है जिससे उसमें जीवन के प्रति संतुष्टि की भावना बढ़ती है। इस मनोदशा का शारीरिक स्वास्थ्य पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। 'बीएमसी पब्लिक हेल्थ' जर्नल में प्रकाशित इस अध्ययन में शोधकर्ता डॉक्टर सुजैन रिचड्र्स ने कहा, हमारा अध्ययन दिखलाता है कि परोपकार का स्वास्थ्य में बढ़ोतरी से संबंध है। हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि स्वस्थ लोग भलाई का काम करने में ज़्यादा दिलचस्पी लेते हैं या भलाई का काम करने की वजह से उनके स्वास्थ्य में उन्नति होती है।

कम काम देता है तनाव-

अधिक काम को तनाव का कारण माना जाता है, लेकिन एक नए अध्ययन में दावा किया गया है कि कम काम करने वाले लोगों को तनाव का ज़्यादा खतरा हो सकता है।

इस अध्ययन के अनुसार जिन लोगों का साप्ताहिक कार्य समय कम घंटों का होता है उनको ज़्यादा देर तक काम करने वालों की तुलना में तनाव का अधिक खतरा होता है। दक्षिण कोरिया में कराए गए इस अध्ययन में पाया गया कि काम के घंटे घटाने का कुल मिलाकर काम और जीवन के प्रति संतुष्टि पर कुछ खास असर नहीं पड़ता। शोधकर्ताओं ने अलग कार्य समयों में काम करने वाले लोगों और उनके परिवारों में खुशहाली के स्तर का अध्ययन कर नतीजा निकाला। ❑❑